RITES
THE INFRASTRUCTURE PEOPLE

ईमानदारी–एक जीवन शैली

Integrity - A way of Life

Vigilance Awareness Week

28th Oct – 2nd Nov 2019

सतर्कता बुलेटिन

VIGILANCE BULLETIN

RITES
THE INFRASTRUCTURE PEOPLE

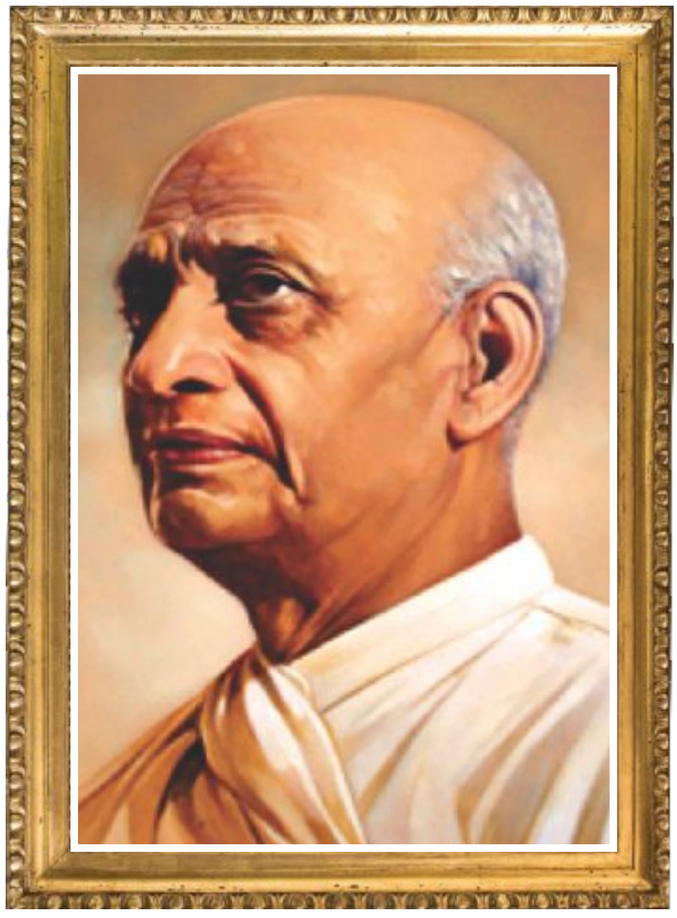

Sardar Vallabh Bhai Patel

(31.10.1875 to 15.12.1950)

Vigilance awareness week is observed every year as a mark of respect to Sardar Vallabh Bhai Patel

अस्वीकरण

यह पुस्तिका केवल सांकेतिक है तथा किसी भी रूप में यह सर्वांगीण नही है और न ही विषयक नियमों, प्रक्रियाओं तथा वर्तमान अनुदेशों/दिशानिर्देशों का प्रतिस्थापन है और न ही इसमें दी गई विषयवस्तु किसी भी रूप में सीवीसी/रेलवे/राइट्स संहिता के नियम का अधिक्रमण करती है | अतः इसे संबंधित नीति के परिपत्रों के साथ पढ़ा जाए ताकि संगत मामले को वास्तविक रूप में समझा जा सके | यह पुस्तिका किसी भी न्यायालय में प्रस्तुत नही की जानी चाहिए तथा जहां कहीं आवश्यक हो वहां अनिवार्यता संबधित विषय के मूल आदेशों का संदर्भ लेना चाहिए | इस पुस्तिका का मुख्य उदेश्य केवल संदर्भ मात्र है |

DISCLAIMER

The handbook is only indicative and is by no means exhaustive, nor is it intended to be a substitute for rules, procedures and existing instructions / guidelines on the subject. The contents herein do not in any way supersede the rules contained in any of the CVC / RAILWAY / RITES codes and should be read with relevant policy circulars for proper appreciation of the issues involved. This handbook also should not be produced in any court of law and whenever necessary, reference should always be made to the original orders on the subject. The primary purpose of the handbook is for reference only.

RITES
THE INFRASTRUCTURE PEOPLE

भ्रष्टाचार के खिलाफ भागीदारी - ईमानदारी की शपथ

नागरिकों के लिए

मेरा विश्वास है कि हमारे देश की आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक प्रगति में भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा है। मेरा विश्वास है कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने के लिए सभी संबंधित पक्षों जैसे सरकार, नागरिकों तथा निजी क्षेत्र को एक साथ मिल कर कार्य करने की आवश्यकता है।

मेरा मानना है कि प्रत्येक नागरिक को सतर्क होना चाहिए तथा उसे सदैव ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए तथा भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष में साथ देना चाहिए।

अतः मैं प्रतिज्ञा करता हूं किः-

- जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी तथा कानून के नियमों का पालन करूंगा;
- ना तो रिश्वत लूंगा और ना ही रिश्वत दूंगा;
- सभी कार्य ईमानदारी तथा पारदर्शी रीति से करूंगा;
- जनहित में कार्य करूंगा;
- अपने निजी आचरण में ईमानदारी दिखाकर उदाहरण प्रस्तुत करूंगा;
- भ्रष्टाचार की किसी भी घटना की रिपोर्ट उचित एजेंसी को दूंगा;

PARTICIPATE AGAINST CORRUPTION INTEGRITY PLEDGE

For individual citizens

I believe that corruption has been one of the major obstacles to economic, political and social progress of our country. I believe that all stakeholders such as Government, citizens and private sector need to work together to eradicate corruption.

I realize that every citizen should be vigilant and commit to highest standards of honesty and integrity at all times and support the fight against corruption.

I, therefore, pledge:

- To follow probity and rule of law in all walks of life;
- To neither take nor offer bribe;
- To perform all tasks in an honest and transparent manner;
- To act in public interest;
- To lead by example exhibiting integrity in personal behavior;
- To report any incident of corruption to the appropriate agency.

संगठनों के लिए सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा

मेरा विश्वास है कि हमारे देश की आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक प्रगति में भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा है। मेरा विश्वास है कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने के लिए सभी संबंधित पक्षों जैसे सरकार, नागरिकों तथा निजी क्षेत्र को एक साथ मिल कर कार्य करने की आवश्यकता है।

इस दिशा में स्वयं को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करने तथा रक्षोपाय, सत्यनिष्ठा ढांचा तथा नीति-संहिता स्थापित करने के अपने उत्तरदायित्व को हम स्वीकार करते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम किसी भी भ्रष्ट आचरण का हिस्सा नहीं हैं तथा भ्रष्टाचार के दृष्टांतों पर हमें अत्यधिक सख्ती से कार्रवाई करनी होगी।

मेरा मानना है कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने में तथा अपने कार्यों के सभी पहलुओं में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता तथा सुशासन के उच्चतम मानक बनाए रखने के लिए, एक संगठन होने के नाते हमें सामने से नेतृत्व करना होगा।

अतः हम प्रतिज्ञा करते हैं किः-

हम नीतिपरक कार्य पद्धतियों को बढ़ावा देंगे तथा ईमानदारी और सत्यनिष्ठा की संस्कृति को प्रोत्साहन देंगे;

हम न तो रिश्वत लेंगे और न ही रिश्वत देंगे;

हम पारदर्शिता, जिम्मेवारी तथा निष्पक्षता पर आधारित निगमित सुशासन की प्रतिज्ञा करते हैं;

हम कार्यों के संचालन में संबद्ध कानूनों, नियमावलियों तथा अनुपालन प्रक्रियाओं का पालन करेंगे;

हम अपने सभी कर्मचारियों के लिए एक नीति-संहिता अपनाएंगे;

हम अपने कर्मचारियों को उनके कर्तव्यों के ईमानदार निष्पादन के लिए, उनके कार्य से संबद्ध नियमों, विनियमों आदि के बारे में सुग्राही बनाएंगे;

हम समस्याओं तथा कपटपूर्ण कार्यकलापों की सूचना देने के लिए समस्या समाधान तथा पर्दाफाश तंत्र का प्रबंध करेंगे।

Integrity Pledge for Organizations

We believe that corruption has been one of the major obstacles to economic, political and social progress of our country. We believe that all stakeholders such as Government, citizens and private sector need to work together to eradicate corruption.

We acknowledge our responsibility to lead by example and the need to put in place safeguards, integrity frameworks and code of ethics to ensure that we are not part of any corrupt practice and we tackle instances of corruption with utmost strictness.

We realize that as an Organization, we need to lead from the front in eradicating corruption and in maintaining highest standards of integrity, transparency and good governance in all aspects of our operations.

We, therefore, pledge that:

- We shall promote ethical business practices and foster a culture of honesty and integrity;
- We shall not offer or accept bribes;
- We commit to good corporate governance based on transparency, accountability and fairness;
- We shall adhere to relevant laws, rules and compliance mechanisms in the conduct of business;
- We shall adopt a code of ethics for all our employees;
- We shall sensitise our employees of laws, regulations etc. relevant to their work for honest discharge of their duties;
- We shall provide grievance redressal and Whistle Blower mechanism for reporting grievances and fraudulent activities;
- We shall protect the rights and interests of stakeholders and the society at large.

Telegraphic Address :
"SATARKTA: New Delhi

E-Mail Address
cenvigil@nic.in

Website
www.cvc.nic.in

EPABX
011-24600200

फैक्स / Fax :
011-24651186

सत्यमेव जयते

केन्द्रीय सतर्कता आयोग
CENTRAL VIGILANCE COMMISSION

सतर्कता भवन, जी.पी.ओ. कॉम्पलैक्स,
ब्लॉक–ए, आई.एन.ए., नई दिल्ली–110023
Satarkta Bhawan, G.P.O. Complex,
Block A, INA, New Delhi-110023

सं. / No. 019/VGL/029

दिनांक / Dated 16.10.2019

MESSAGE

The Vigilance Awareness Week observed each year by the Central Vigilance Commission affirms Commission's commitment to promotion of integrity and probity in public life through citizen participation.

"Integrity- A way of life" has been chosen as the theme for the Vigilance Awareness Week this year by the Commission. Integrity and Ethics form the foundational pillars of a nation and national development takes place when individuals and organisations are committed to integrity as a core value. Combating corruption is not just a matter of making laws and creating institutions, but is deeply rooted in human values and morals of individuals. Cultivating ethical values is essential for building a New India.

The Commission believes that this theme would help draw the attention of all sections of society especially the youth of the significance of ethical conduct in the building of an honest, non discriminatory and corruption free society.

The Commission's initiatives like the taking of voluntary Integrity Pledge, Integrity Clubs in schools and colleges, mass awareness campaigns are efforts to motivate people to observe ethical behaviour in everyday life.

The Commission appeals to all to inculcate integrity as a way of life for the realisation of the full potential of the individual and progress of the nation.

(Sharad Kumar)
Central Vigilance Commissioner

Rajeev Mehrotra

प्रिय साथियों,

आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रत्येक वर्ष स्व. सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिवस अर्थात् 31 अक्टूबर वाले सप्ताह को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के रूप में मनाया जाता है। केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) ने २८ अक्टूबर से २ नवंबर २०१९ तक मनाए जाने वाले सतर्कता जागरूकता सप्ताह के लिए "ईमानदारी - एक जीवन शैली" विषय का चयन किया है।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने हमारे सामने एक नए भारत की परिकल्पना रखी है। इस वर्ष का विषय सभी को, विशेष रूप से युवा पीढ़ी को एक ऐसा जीवन जीने के महत्व को रेखांकित करता है जिसमें सच्चाई एवं ईमानदारी का ऐसा मेल हो कि हम भ्रष्टाचार को मिटाते हुए नए भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर अग्रसर हों। भारत में ५० प्रतिशत से अधिक की आबादी २५ वर्ष से कम तथा ६५ प्रतिशत से अधिक की आबादी ३५ वर्ष से कम आयु वालों की है। देश के आर्थिक विकास के लिए जनसंख्या संबंधी इस लाभ की स्थिति का उपयोग करने का यह अच्छा अवसर है।

निवारक सतर्कता के रूप में, राइट्स ने अप्रैल, २०१९ में एचआरएम मैनुअल तथा निर्माण कार्यों के लिए निर्माण परियोजना प्रबंधन दिशानिर्देशों में संशोधन किया है। स्पष्टता लाने के लिए सभी स्तरों पर प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है ताकि स्वनिर्णय की स्थिति से बचा जा सके। प्रशिक्षण में नियमों का अक्षरश: पालन किए जाने के महत्व को भी रेखांकित किया जाता है। भ्रष्टाचार मुक्त नव भारत के निर्माण का लक्ष्य प्राप्त करना अब दूर नहीं है; किंतु इसके लिए हमें ईमानदारी, पारदर्शिता, उचित व्यवहार तथा सभी को न्यायसंगत अवसर जैसे गुणों को युवाओं के मन में बैठाना होगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि सतर्कता जागरूकता सप्ताह-२०१९ के दौरान मुख्य सतर्कता अधिकारी के नेतृत्व में राइट्स सतर्कता टीम द्वारा वाक् प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, व्याख्यान, विक्रेता-मिलन, बाहरी गतिविधियां जैसे कि नुक्कड़ नाटक, सेमिनार सहित सतर्कता बुलेटिन के प्रकाशन आदि कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। मेरी कामना है कि सभी कर्मचारी इन गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लें।

आइए, इस अवसर पर अपने राष्ट्र को भ्रष्टाचार से मुक्त करने के लिए ईमानदारी को अपनी जीवन शैली में शामिल करने की शपथ लें।

(राजीव मेहरोत्रा)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

Dear Colleagues

My greetings to all of you.

The week in which 31st October, the birthday of late Sardar Vallabhbhai Patel falls is observed as Vigilance Awareness Week every year. Central Vigilance Commission (CVC) has chosen “Integrity- A way of life” as the main theme for this year’s Vigilance Awareness Week, being observed from 28th October to 2nd November 2019.

A vision of New India has been unfolded by our Honourable Prime Minister. The theme of this year emphasizes the importance of inspiring everyone, especially young generation to lead a life that combines righteousness and honesty to eradicate corruption to achieve goal of new India. India has more than 50% of its population below the age of 25 and more than 65% below the age of 35. This has provided a great opportunity for the country to reap this demographic dividend for making economic growth.

As a part of Preventive Vigilance, RITES has revised the HRM Manual and Guidelines on Construction Project Management for works in April 2019. Trainings are being imparted at all levels to bring clarity so as to avoid personal discretion and underlining the importance that the rules are followed in their letter and spirit. The day to achieve the target of building corruption free New India is not far if the qualities like Honesty, Transparency, Fair dealings and equitable opportunities to all are inculcated in the young brains.

I am glad to note that RITES Vigilance Team under the guidance of Chief Vigilance Officer is organizing a number of programs including Elocution Competition, Essay writing Competition, Lectures, Vendors Meet, Outreach activities like Nukkad Natak, Seminars and release of this vigilance bulletin, during the Vigilance Awareness Week-2019. I wish that all employees take an active participation in these activities.

On this occasion, let us pledge and practise to make Integrity a way of our life to make our nation corruption free.

(Rajeev Mehrotra)
Chairman and Managing Director

THE INFRASTRUCTURE PEOPLE

Ashok Kumar

केंद्रीय सतर्कता आयोग के दिशानिर्देशों के अनुसार इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह २८ अक्टूबर से २ नवंबर २०१९ तक मनाया जा रहा है और इसका विषय है - "ईमानदारी एक जीवन शैली" । हम सभी भ्रष्टाचार के कुप्रभावों से भली-भांति परिचित हैं । भ्रष्टाचार की गहरी जड़ें देश की प्रगति में एक सबसे बड़ी बाधा है। हम ईमानदारी को अपनी जीवन शैली के रूप में अपनाकर ही हर क्षेत्र से भ्रष्टाचार को मिटा सकते हैं। हालांकि, सजा तथा तेजी से की गई दंडात्मक कार्रवाइयाँ भ्रष्टाचार को रोकने के लिए प्रभावकारी होती हैं, लेकिन युवा पीढ़ी को सच्चाई एवं ईमानदारी से परिपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करके बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। इस वर्ष के सतर्कता जागरूकता सप्ताह का विषय "ईमानदारी- एक जीवन शैली" चुनने के पीछे केंद्रीय सतर्कता आयोग का यही मुख्य उद्देश्य है।

भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए भारत सरकार के सतत प्रयासों से अच्छे परिणाम मिल रहे है, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा घोषित भ्रष्टाचार बोध सूचकांक (करप्शन परसेप्शन इंडेक्स) पर आधारित भारत की रैंकिंग में ३ अंकों का सुधार हुआ है और वर्ष २०१८ में भारत ७८ वें स्थान पर रहा। हालांकि, अभी भी हमारे देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए हमें एक लंबा रास्ता तय करना है। हमें अपने राष्ट्र के युवाओं पर पूरा विश्वास है जिनमें ईमानदारी के उच्चतम मानकों को अपनाकर कठिन से कठिन लक्ष्य को भी प्राप्त करने की क्षमता और ऊर्जा है। हमारा यह कर्तव्य है कि हम उन्हें बाल्यकाल से ऐसा रास्ता दिखाएं कि वे भटकें नहीं और तथाकथित सफल एवं सुखद जीवन प्राप्त करने के लिए अनैतिक तरीके न अपनाएं।

इसे ध्यान में रखते हुए, सतर्कता विभाग सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन के अंतर्गत "ईमानदारी- एक जीवन शैली" विषय पर विभिन्न गतिविधियों जैसे विद्यालयों में वाक् प्रतियोगिता तथा राइट्स कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता, विक्रेता मिलन, बाहरी गतिविधियां जैसे नुक्कड़ नाटक, संगोष्ठियां, व्याख्यान तथा इस बुलेटिन का प्रकाशन कर रहा है।

हमने इस सतर्कता बुलेटिन में निवारक जांच के अपने अनुभव के आधार पर केस अध्ययनों, कुछ लेखों तथा कविताओं को शामिल किया है। मैं आशा करता हूं कि यह बुलेटिन राइट्स के युवा पेशेवरों को ईमानदार बनने की प्रतिज्ञा करने एवं ईमानदारी को अपनी जीवन शैली के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित करेगा। मैं उम्मीद करता हूं कि हमारे संगठन के वरिष्ठ अधिकारी स्वयं को सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों के उदाहरण के रूप में पेश करेंगे ताकि युवा पेशेवर उन्हें आदर पूर्वक देखें और उनसे प्रेरित हों। आप सभी कृपया हमें सतर्कता जागरूकता सप्ताह की गतिविधियों पर अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराएं जिससे कि २०२० के सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन को और बेहतर बनाया जा सके

(अशोक कुमार)

मुख्य सतर्कता अधिकारी

Vigilance Awareness Week is being observed this year from 28th October to 2nd November 2019 with the theme of "Integrity-A way of Life" as per the directives of Central Vigilance Commission. The evil effects of corruption are well known to all of us. The deep rooted corruption is one of the main causes which is adversely affecting the progress of our nation. Corruption from every walk of life can only be rooted out if each one of us makes integrity a way of life. Though punishment and penal actions delivered quickly are effective deterrents to corruption, a lot more may be achieved by inspiring the young generation to lead a life that combines righteousness and honesty. This is the idea of CVC behind choosing "Integrity-A way of life" as main theme for this year's Vigilance Awareness Week.

Sustained efforts of Govt. of India to curb corruption are giving good results which is evident from the fact that India's rank based on Corruption Perception Index declared by Transparency International has improved by 3 points and India stood at 78 in 2018. However, still it's a long way to go to make our nation corruption free. I have utmost faith in youth of our nation who has potential and energy to achieve any target however tough it may be by adopting highest standards of integrity. Our role is to guide them in the tender age not to go astray falling prey to unethical means to have so called successful and comfortable life.

Keeping this in mind, Vigilance unit is organizing various activities including Elocution competition in schools and Essay writing competition for RITES employees on the main theme of "Integrity-A way of Life", Vendors meet, Outreach activities like Nukkad Natak, seminars, Lectures and publishing of this bulletin to commemorate Vigilance Awareness Week.

We have included case studies based on our experience of preventive checks, some articles and poems in this vigilance bulletin. I hope that this bulletin will inspire young professionals of RITES to pledge and practise to make integrity a way of their life. I expect senior officers of our organization to set themselves as an example for highest standards of probity so that the young professionals can look up to them and get inspired. A genuine feedback about the activities of Vigilance Awareness Week from one and all will be highly appreciated for better performance during Vigilance Awareness Week of 2020.

Ashok Kumar
Chief Vigilance Officer

Mukesh Rathore

किसी प्राधिकार पूर्ण पद पर आसीन व्यक्ति द्वारा स्वयं के लिए अथवा किसी अन्य व्यक्ति के लिए लाभ प्राप्त करने हेतु किए गए कपटपूर्ण या अनैतिक आचरण को भ्रष्टाचार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह विश्वव्यापि है, जिससे समाज का प्रत्येक वर्ग किसी न किसी तरह से प्रभावित होता है। भ्रष्टाचार राजनीतिक विकास, लोकतंत्र, आर्थिक विकास, पर्यावरण, लोगों के स्वास्थ्य एवं अन्य पहलूओं पर भी प्रभाव डालता है। इसलिए भ्रष्टाचार को खत्म करने के प्रयासों के प्रति जनता को संवेदनशील और प्रेरित किए जाने की आवश्यकता है।

मुख्य सतर्कता अधिकारी के मार्गदर्शन में राइट्स सतर्कता टीम विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर रही है जिसके अंतर्गत विद्यालयों के विद्यार्थियो में जागरूकता लाने के लिए वाक् प्रतियोगिता तथा राइट्स कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता, विशेषज्ञों के व्याख्यान, नुक्कड़ नाटक तथा इस बुलेटिन का प्रकाशन किया जाना शामिल है। हमें भारतीय युवाओं में ईमानदारी के उच्च मानकों को विकसित करना होगा ताकि समाज के सभी हिस्सों से भ्रष्टाचार को समाप्त करके हमारे नये एवं उन्नत भारत के निर्माण का सपना साकार हो।

नियमों या प्रक्रियाओं के निर्धारित न होने अथवा अस्पष्ट नियमों के कारण स्वविवेक की गुंजाइश होने से संदेहास्पद स्थिति उत्पन्न होती है जिससे भ्रष्टाचार हो सकता है। इसे समाप्त करने के लिए सतर्कता टिप्पणियों के आधार पर निदेशक तकनीकी के अंतर्गत कार्यरत विभिन्न डिविजनों में प्रणालीगत सुधार परिपत्रों के द्वारा इसे और अधिक स्पष्ट बनाया गया है तथा पारदर्शी प्रणालियों को अपनाया गया है।

निरीक्षणों में पाई गई कमियों तथा किए गए सुधारों के संबंध में इस सतर्कता बुलेटिन में प्रकाशित किए गए मामलों से निरीक्षणकर्ता इंजीनियरों के साथ-साथ विक्रेताओं को भी मदद मिलेगी। मेरा आग्रह है कि हम सभी उन कमियों की पहचान करके सतर्क रहें जो अनाचार और भ्रष्टाचार के लिए अवसर प्रदान करती हैं, ताकि ऐसे अवसरों पर अंकुश लगाया जा सके। इस बुलेटिन के प्रकाशन में मुख्य सतर्कता अधिकारी और सतर्कता टीम द्वारा किए गए प्रयास सराहनीय हैं।

(मुकेश राठौर)
निदेशक तकनीकी

Corruption can be defined as a dishonest or unethical conduct by a person entrusted with a position of authority, either to obtain benefits to oneself or to some other person. It is a global phenomenon, affecting all strata of society in some way or the other. Corruption undermines political development, democracy, economic development, the environment, people's health and much more. It is therefore imperative that the public must be sensitized and motivated towards efforts at weeding out corruption.

RITES vigilance under the guidance of Chief Vigilance Officer are undertaking various activities to bring the awareness among school students by conducting elocution competition and RITES employees by conducting essay writing competition, arranging expert lecture, Nukkad Natak and publishing of this vigilance bulletin. The youth of India should be inculcated with high standards of integrity so that dream of New India or Developed India can be achieved by uprooting corruption from all spheres of society.

Not having laid down rules or procedures or having ambiguous rules giving scope to personal discretion is one of the grey areas where corruption can take place. To plug this, systemic improvement circulars have been issued bringing more clarity and also adopting the transparent systems in various divisions under Director Technical based on Vigilance observations.

The case studies published in Vigilance bulletin with regard to deficiencies found in Inspection works and improvements made will help inspecting engineers as well as vendors. I urge that all of us become vigilant by identifying deficiencies which provide opportunities for malpractices and corruption so that such opportunities can be curbed. Efforts of CVO and team in bringing out this bulletin are commendable.

(Mukesh Rathore)
Director Technical

V. Gopi Suresh Kumar

मुझे प्रसन्नता है कि केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशों के अनुसार राइट्स के सतर्कता विभाग द्वारा २८ अक्टूबर से २ नवंबर, २०१९ तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है।

प्रति वर्ष आयोजित किया जाने वाला सतर्कता जागरूकता सप्ताह केंद्रीय सतर्कता आयोग के बहु-आयामी दृष्टिकोण का हिस्सा है। ये सभी स्टेकहोल्डरों को भ्रष्टाचार के विरूद्ध सामूहिक रूप से लड़ने तथा इसे रोकने और इससे उत्पन्न खतरों के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करता है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान राइट्स सतर्कता टीम सतर्कता बुलेटिन के प्रकाशन के साथ-साथ विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन भी कर रही है।

जैसा कि संथानम समिति की रिपोर्ट, १९६४ में कहा गया है, "जब तक निवारक उपायों से संबंधित योजना नहीं बनाई जाती तथा इन्हें अनवरत एवं प्रभावशील तरीके से लागू नहीं किया जाता, तब तक भ्रष्टाचार को समाप्त या काफी हद तक कम नहीं किया जा सकता है। निवारक कार्रवाई में प्रशासनिक, कानूनी, सामाजिक, आर्थिक और शिक्षाप्रद उपाय शामिल होने चाहिए।" परहेज इलाज से बेहतर है। मेरे विचार से, दण्डात्मक सतर्कता से निवारक सतर्कता अधिक महत्वपूर्ण है। निवारक सतर्कता को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए राइट्स ने दिन-प्रतिदिन की विभिन्न गतिविधियों के लिए नियम, प्रक्रियाएं, मैनुअल तथा शक्तियों की अनुसूची निर्धारित की है। राइट्स ने मानक निविदा दस्तावेज भी जारी किए हैं तथा नियमित रूप से संशोधन पर्ची के माध्यम से इसे अद्यतित भी किया जाता है। हाल ही में निर्माण कार्यों के लिए मानक निविदा दस्तावेजों को जुलाई, २०१९ में संशोधित किया गया है। ये सभी दस्तावेज मिलकर, स्वनिर्णय तथा मनमानापन जैसी स्थितियों पर लगाम कस सकते हैं जिसके फलस्वरूप भ्रष्टाचार का सफाया संभव हो सकता है। मुख्य सतर्कता आयोग तथा सतर्कता द्वारा जांच के दौरान जहां कही भी कमियां पाई जाती है, वहां स्व-निर्णय को कम करने के लिए हमें निरंतर नियमों में सुधार करना चाहिए, उन्हें सरल बनाना चहिए तथा प्रोद्योगिकी का उपयोग करना चाहिए। इसी दिशा में हमने ई-प्रोक्योरमेंट का कार्यान्वयन किया है तथा अब ई-ऑफिस क्रियान्वित करने की दिशा में अग्रसर हैं।

मैं इस सप्ताह के दौरान कार्यक्रमों के आयोजन और इस बुलेटिन को प्रकाशित करने के लिए मुख्य सतर्कता अधिकारी और उनकी टीम को उनके प्रयासों के लिए बधाई देता हूं। मैं सभी कर्मचारियों से आग्रह करता हूं कि वे पूरे वर्ष सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों के प्रति प्रतिबद्ध रहें।

(वी. गोपी सुरेश कुमार)
निदेशक परियोजना

I am happy that Vigilance Wing of RITES is organizing vigilance awareness week from 28th October to 2nd November 2019 as per the directives of Central Vigilance Commission.

Observing Vigilance Awareness Week every year is part of the multi-pronged approach of CVC to encourage all stakeholders to collectively participate in the prevention of and the fight against corruption and to raise public awareness regarding the existence, causes and gravity of the threat posed by corruption. RITES Vigilance is organizing various activities including publication of this Vigilance Bulletin during vigilance awareness week.

As stated in Santhanam Committee Report,1964 "Corruption cannot be eliminated or even significantly reduced unless preventive measures are planned and implemented in a sustained and effective manner. Preventive action must include administrative, legal, social, economic and educative measures". Prevention is better than cure. In my view, preventive vigilance is more important than punitive vigilance. To make preventive vigilance more effective, RITES has laid down rules, procedures, manuals and Schedule of Powers to deal with various day to day activities. RITES has also issued standard Tender documents and continuous updating of these documents through correction slips is also undertaken regularly. Recently, the Standard Tender Document for works has been revised in July 2019. All these documents, together, reduce the discretion and arbitrariness which results in eradication of corruption. We should strive for continuous improvement and simplification of rules and technological intervention to reduce the discretion wherever gaps are found during checks by CVC or Vigilance. In this direction, we have moved forward by implementing E-Procurement and now are about to implement E-office.

I congratulate CVO and his team for their efforts for undertaking the activities during the week and for bringing out this bulletin. I will urge upon all the employees to continue their commitment towards higher standards of probity in public life, throughout the year.

V. Gopi Suresh Kumar
Director Projects

No. 004/VGL/18
Government of India
Central Vigilance Commission
******

Satarkata Bhawan, Block-A,
GPO Complex, INA,
New Delhi-110023.
Dated:13th April,2004

Offce Order No. 23/04/04
(read with modifcation vide offce Order No. 74/12/05)

Subject: Vigilance angle – defnition of.

As you are aware, the Commission tenders advice in the cases, which involve a vigilance angle. The term "vigilance angle" has been defined in the Special Chapters for Vigilance Management in the public sector enterprises, public sector banks and public sector insurance companies. The matter with regard to bringing out greater quality and precision to the definition has been under reconsideration of the Commission. The Commission, now accordingly, has formulated a revised definition of vigilance angle as under:

"Vigilance angle is obvious in the following acts: -

(i) Demanding and/or accepting gratification other than legal remuneration in respect of an official act or f o r using his influence with any other official.
(ii) Obtaining valuable thing, without consideration or with inadequate consideration from a person with whom he has or likely to have official dealings or his subordinates have official dealings or where he can exert influence.
(iii) Obtaining for himself or for any other person any valuable thing or pecuniary advantage by corrupt or illegal means or by abusing his position as a public servant.
(iv) Possession of assets disproportionate to his known sources of income.
(v) Cases of misappropriation, forgery or cheating or other similar criminal offences.

2 (a)** There are, however, other irregularities where circumstances will have to be weighed carefully to take a view whether the officer's integrity is in doubt. Gross or willful negligence; recklessness in decision making; blatant violations of systems and procedures; exercise of discretion in excess, where no ostensible/public interest is evident; failure to keep the controlling authority/superiors informed in time – these are some of the irregularities where the disciplinary authority with the help of the CVO should carefully study the case and weigh the circumstances to come to a conclusion whether there is reasonable ground to doubt the integrity of the offcer concerned.

2 (b) Any undue/ unjustifed delay in the disposal of a case, perceived after considering all relevant factors, would reinforce a conclusion as to the presence of vigilance angle in a case.

**as modifed vide Offce Order No. 74/12/05 dated the 21/12/05.

3. The raison d'être of vigilance activity is not to reduce but to enhance the level of managerial efficiency and effectiveness in the organization. Commercial risk taking forms part of business. Therefore, every loss caused to the organization, either in pecuniary or non-pecuniary terms, need not necessarily become the subject matter of a vigilance inquiry. Thus, whether a person of common prudence, working within the ambit of the prescribed rules, regulations and instructions, would have taken the decision in the prevailing circumstances in the commercial/operational interests of the organization is one possible criterion for determining the bonafides of the case. A positive response to this question may indicate the existence of bonafides. A negative reply, on the other hand, might indicate their absence.

4. Absence of vigilance angle in various acts of omission and commission does not mean that the concerned official is not liable to face the consequences of his actions. All such lapses not attracting vigilance angle would, indeed, have to be dealt with appropriately as per the disciplinary procedure under the service rules."

5. The above definition becomes a part of the Vigilance Manual and existing Special Chapter on Public Sector Banks and Public Sector Enterprises brought out by the Commission, in supersession of the existing definition.

CVOs may bring this to the notice of all concerned.

All Chief Vigilance Officers

सिविल इंजीनियरिंग कार्यों में अनियमितता के मामलों का अध्ययन

CASE STUDIES OF IRREGULARITIES FOUND IN CIVIL ENGG WORKS

अतिरिक्त मद को तैयार करना और उसका भुगतान करना जो कि मान्य नहीं था

सीटीई जाँच के दौरान यह देखा गया कि ठेकेदार को विस्फोट (बलास्ट) किए बिना खुदाई की मद को संचालित करने की अनुमति दी गई थी, तथापि बीओक्यू के अनुसार खुदाई ब्लास्टिंग के साथ की जानी थी। जांच से यह स्पष्ट पाया गया कि शुरुआत में खुदाई केवल ब्लास्टिंग के साथ की जानी थी । लेकिन ठेकेदार की गलती ने इस तरह की परिस्थिति पैदा कर दी जिसके कारण आसपास के इलाकों में बन रही संरचनाओं की वजह से विस्फोट संभव नहीं था। इस तरह के परिदृश्य में, किसी भी अतिरिक्त मद को पहली बार में ही अनुमति नहीं दी जानी चाहिए थी। हालांकि, ब्लास्टिंग के बिना खुदाई को निष्पादित करने के लिए अतिरिक्त मद पर विचार किया गया था और अतिरिक्त लागत का 75% हिस्सा भी भुगतान किया गया था। इसके अलावा, राइट्स के अधिकारियों ने खुदाई का काम शुरू करने के बाद चार साल तक चट्टान/मिट्टी के वर्गीकरण में देरी की। राइट्स के अधिकारियों को प्रारंभिक चरण में ही चट्टान/मिट्टी को वर्गीकृत करना चाहिए था और साथ ही ठेकेदार पर विस्फोट के साथ खुदाई करने के लिए दबाव बनाना चाहिए था। असंगत योजना बनाने तथा कार्य योजना के अनुसार कार्य की निगरानी नहीं करना, यह न जाँचना कि क्या अतिरिक्त मद उन परिस्थितियों में मान्य थी, जिनमें ठेकेदार की गलती के कारण बिना ब्लास्टिंग के खुदाई का कार्य किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप अतिरिक्त आइटम के भाग दर को तैयार करना पड़ा और भुगतान करना पड़ा जो अनुबंध की शर्तों के अनुसार मान्य नहीं था। सभी अधिकारी जो निर्माण/अनुबंध प्रबंधन कार्य कर रहे हैं, उन्हें अतिरिक्त मद के संबंध में सावधानी बरतनी चाहिए ताकि उपर्युक्त वर्णित स्थितियों से बचा जा सके।

Preparation and payment of Extra item which was not tenable

During the CTE checks, it has been observed that contractor was allowed to operate the item of Excavation without blasting though Excavation with blasting was to be carried out as per BOQ. From the investigation it was found amply clear that initially excavation was to be done with blasting only but the fault of contractor created situation for excavation where blasting was not possible, due to upcoming structures in nearby areas. In such a scenario, no extra item should have been entertained at the very first instance. However, extra item for executing excavation without blasting was considered and also part rate of 75% of extra cost was also paid. Further, RITES officials delayed the classification of rock/soil for four years after start of excavation work. RITES officials should have classified the rock/soil in the initial stages and further should have insisted contractor to executive the excavation with blasting. Improper planning and not monitoring the work as per work programme, not checking whether extra item was tenable under the circumstances wherein contractor's fault lead to execution of excavation without blasting resulted in preparation and payment of part rate of extra item which was not tenable as per contract conditions. All officers who are dealing with construction/ contract management works should be careful while processing the extra items to avoid such situations as explained above.

"मेक की स्वीकृत सूची" में शामिल नहीं मेक का उपयोग करना

सीटीई चेक के दौरान, यह देखा गया है कि अन्य मेक की यूपीवीसी विंडो जो कि "मेक की स्वीकृत सूची में नहीं थी", जैसा कि निविदा दस्तावेज में दिया गया था, का उपयोग कार्य की तात्कालिक आवश्यकता और "मेक की स्वीकृत सूची" में शामिल स्वीकृत विक्रेताओं की समय पर सप्लाई की अक्षमता का हवाला देते हुए किया गया था। इस तरह के मामलों में, "स्वीकृत मेक की सूची" में उल्लिखित के अलावा अन्य मेक को मंजूरी देने का अधिकार निविदा के प्रावधानों के अनुसार प्रभारी इंजीनियर के पास था। उस विशेष मामले में, जीएम प्रभारी इंजीनियर थे। साइट पर काम करने वाले संयुक्त महाप्रबंधक ने अपनी शक्तियों के बाहर जाकर "मेक की स्वीकृत सूची" के अलावा अन्य मेक को मंजूरी दे दी और ठेकेदार को सभी भवनों में यूपीवीसी विंडो के उसी मेक का उपयोग करने की अनुमति दे दी। मामले की जांच के दौरान यह पाया गया कि विश्वविद्यालय परिसर के उद्घाटन से पहले केवल दो भवनों के लिए तात्कालिक आवश्यकता उचित थी। अन्य सभी भवनों के लिए, अनुमोदित सूची में दी गई यूपीवीसी विंडो का उपयोग किया जा सकता था। निर्माण/अनुबंध प्रबंधन कार्यों से जुड़े राइट्स अधिकारियों को अपनी शक्तियों से बाहर जाकर कार्य करने के प्रति सावधान रहना चाहिए और केवल "स्वीकृत सूची में उल्लिखित" मेक का उपयोग करना चाहिए। यदि उचित कारणों से कोई विचलन अपरिहार्य है, तो उपयोग करने से पहले विचलन के लिए औचित्य देते हुए सक्षम प्राधिकारी से अनुमोदन प्राप्त किया जाना चाहिए। विचलन के कारण, लागत समायोजन अनुबंध के प्रावधानों के अनुसार किया जाना चाहिए।

Using make not in “Approved list of makes”

During the CTE checks, it has been observed that UPVC windows of other make which was not in the “Approved List of Makes” as given in tender document were used citing exigency of work and inability of Approved vendors to supply the makes figured in “Approved List of Makes” in time. In such cases, the authority to approve the make other than those mentioned in “Approved List of Makes” was Engineer-in-Charge as per Tender provisions. In that particular case, GM was the Engineer-in-Charge. JGM working at site approved the make other than the “Approved List of Makes” overstepping his powers and allowed contractor to use the same make of UPVC window in all buildings. During the examination of the case, it was found that the exigency was justifiable for only two buildings which were to be completed before inauguration of University Campus. For all the other buildings, the UPVC windows given in approved list could have been used. RITES officers dealing with construction/ contract management works should be careful not to overstep their powers and also to use only the makes mentioned in “Approved List of Makes”. In case any deviation is unavoidable due to genuine reasons, approval from Competent Authority giving justification for the deviation should be obtained prior to use. Cost adjustment on the account of the deviation should be done as per the provisions of contract.

RITES
THE INFRASTRUCTURE PEOPLE

ओपन टेंडर के खिलाफ प्राप्त एकमात्र बोली का निर्वहन (डिस्चार्ज)

सतर्कता निरीक्षण में यह देखा गया कि खुली निविदाओं के आमंत्रण के विरुद्ध प्राप्त की गई एकमात्र बोली का मूल्यांकन किया गया और पाया गया कि बोलीदाता को तकनीकी रूप से अपनी मूल्य बोली खोलने के लिए योग्य माना गया था। एकमात्र बोली लगाने वाले की बोली को खोला जाना चाहिए था और यह देखा जाना चाहिए था कि निर्माण परियोजना प्रबंधन, दिसंबर 2015 के राइट्स दिशानिर्देशों के अनुसार उद्धृत मूल्य स्वीकार्य सीमा के भीतर था या नहीं। तथापि, तकनीकी बोली के खुलने की तारीख से लगभग 41 दिनों के बाद यानी ब्रीफिंग नोट तैयार करने के बाद, ग्राहक निविदा समिति से बोलीदाता द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रत्यय पत्र (क्रेडेन्शियल्स) की पुष्टि की कार्रवाई के बाद निविदा के डिस्चार्ज के लिए संस्तुति की गई जिसे कि सक्षम प्राधिकारी द्वारा स्वीकार किया गया था, जबकि बोलीदाता तकनीकी मानदंड पूर्ण कर रहा था, निविदा को डिस्चार्ज करने का कारण "कोई प्रतियोगिता नहीं" दिया गया। चूंकि एकमात्र बोली प्राप्त करने के तथ्य का खोलने के दिन ही पता चल गया था, 41 दिनों के बाद "नो कॉम्पिटिशन" के कारण का हवाला देते हुए निविदा का निर्वहन करना, सीपीएम, दिसंबर 2015 के राइट्स दिशानिर्देशों के अनुरूप नहीं था। इसके अलावा, सीपीएम पर राइट्स दिशानिर्देशों से विचलन के लिए कोई अनुमोदन निदेशक परियोजना से प्राप्त नहीं किया गया था, जबकि यह स्पष्ट रूप से दिशानिर्देशों के फोरवार्ड के पैरा 12.0 में उल्लेख किया गया है कि किसी भी आकस्मिकता की स्थिति में, जिसमें किसी विशेष परियोजना की परिस्थितियों के अनुरूप दिशानिर्देशों में पूरक/विचलन की आवश्यकता हो सकती है, इसे निदेशक परियोजना के अनुमोदन से किया जा सकता है जो ऐसे मामलों में उपयुक्त प्राधिकारी हैं। परियोजना समन्वयक, निविदा समिति और निविदा स्वीकृति प्राधिकारी के उपरोक्त कृत्यों के परिणामस्वरूप 41 दिनों की बर्बादी हुई। निविदाओं से जुड़े कार्यों को करने वाले सभी अधिकारियों को सावधानीपूर्वक सीपीएम पर दिशानिर्देशों का पालन करना चाहिए।

Discharge of Lone bid received against Open Tender

In vigilance inspection it was observed that the lone bid received against invitation of open tenders was evaluated and found that the bidder was technically qualified for opening of their Price bid. The Price bid of the lone bidder should have been opened and seen whether the quoted price was within the acceptable limit as per RITES Guidelines on Construction Project Management, Dec. 2015. However, after nearly 41 days from the date of opening of Technical bid ie after preparation of Briefing Note, obtaining confirmation of credentials submitted by the bidder from clients, Tender Committee recommended for discharging the tender which was accepted by Competent Authority though the bidder was meeting the Technical Criteria, citing “no competition” as reason for discharging the tender. As the fact of receiving lone bid was known on the day of opening itself, discharging the tender citing the reason of “No Competition” after 41 days was not in line with RITES Guidelines on CPM, Dec. 2015. Also, no approval for deviating from the RITES Guidelines on CPM was obtained from Director Projects where as it was clearly mentioned in Para 12.0 of FOREWORD to Guidelines that in the event of any contingency that might arise requiring supplementing/ deviating from what is contained in the Guidelines so as to suit the conditions on a particular project, the same may be done with the approval of the Director Projects who is the appropriate authority in such cases. The above acts of Project Coordinator, Tender Committee and Tender accepting authority resulted in wastage of 41 days. All officers dealing with Tenders should follow Guidelines on CPM meticulously.

'निरीक्षण कार्यों' में अनियमितता के मामलों का अध्ययन
CASE STUDIES OF IRREGULARITIES FOUND IN INSPECTION WORKS

निरीक्षणकर्ता इंजीनियर द्वारा आईबीएस पोर्टल पर झूठी सूचना पोस्ट करना

औचक निवारक जांच के दौरान, आईबीएस पर यह पाया गया कि निरीक्षणकर्ता इंजीनियर (आईई) द्वारा निरीक्षण आरंभ कर कॉल का स्टेट्स 'अभी निरीक्षण के अधीन' में परिवर्तित कर दिया गया। परंतु जब फर्म के प्रतिनिधि से चल रहे निरीक्षण के संबंध में पूछताछ की गई, तब फर्म के प्रतिनिधि ने बताया कि उसे आरंभ की गई जांच के संबंध में कोई जानकारी नहीं है। फर्म के प्रतिनिधि एवं निरीक्षणकर्ता इंजीनियर के बीच किसी प्रकार का सम्प्रेषण भी नहीं हुआ। औचक सतर्कता जांच के बारे में सूचना प्राप्त होते ही, निरीक्षणकर्ता इंजीनियर ने केस स्टेट्स को भी 'अभी निरीक्षण के अधीन' से 'लंबित' में परिवर्तित कर दिया।

जांच के पश्चात यह पाया गया कि निरीक्षणकर्ता इंजीनियर ने बार-बार गलत जानकारी पोस्ट की जैसे कि दैनिक कार्य योजना की झूठी अपडेटिंग एवं राइट्स आईबीएस पोर्टल पर केस का स्टेट्स बदलना। वास्तविक निरीक्षण किए बिना निरीक्षण प्रमाणपत्र जारी करने का उनका उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट था। सतर्कता जांच के पश्चात्, निरीक्षणकर्ता इंजीनियर ने पूर्व में केस स्टेट्स के साथ किए गए हेर-फेर को छिपाने के लिए उसमे बदलाव कर दिया।

सीख : निरीक्षणकर्ता इंजीनियर को राइट्स के आईबीएस पोर्टल पर सही एवं सत्य सूचना ही पोस्ट करनी चाहिए तथा नियत्रंक प्रबंधक को और अधिक सतर्क रहना चाहिए तथा उसे अपने अधीन प्रत्येक इंजीनियर की दैनिक गतिविधियों पर निगरानी रखनी चाहिए।

Inspecting Engineer Posted Wrong Information on IBS Portal

In surprise preventive check, it was noticed from IBS that IE had initiated the inspection and changed the call status as "Still under inspection". However, when enquired with firm's representative about ongoing inspection, firm's representative told that he was not aware when the inspection was initiated/started. There was no communication between firm's representative and Inspecting Engineer. On getting the information about the surprise vigilance check, the Inspecting Engineer changed case status to "pending" from "still under inspection".

After investigation it came to notice that Inspecting Engineer had repeatedly posted wrong information like falsely updating daily work plan & changing case status on IBS portal of RITES. His motive to issue Inspection Certificate without doing actual inspection was very clear. After vigilance check, IE changed the call status to hide the manipulation done in call status given earlier.

Lesson: Inspecting Engineer should post correct and true information on IBS portal of RITES and Controlling Manager should be more vigilant and monitor the daily activity of each Inspecting Engineer under him.

राइट्स द्वारा स्वीकृत चैकशीट में सुधार

एक निवारक जांच में यह देखा गया कि राइट्स द्वारा स्वीकृत चैकशीट में से एक में विनिर्दिष्ट आयाम (लंबाई-चौड़ाई) व्यावहारिक रूप से मापना संभव नहीं था क्योंकि सतह वैल्डिंग से ढकी हुई थी। अन्य सामग्रियों की चैकशीट में भी इसी प्रकार की स्थिति हो सकती है। सुझाव हैं कि ऐसी परिस्थितियों को पहचान कर उनका निपटान किया जाए।

सीख : चैकशीट को यह सुनिश्चित करने के पश्चात ही तैयार एवं अनुमोदित किया जाना चाहिए कि चैकशीट में उल्लिखित सभी मापदंडों की व्यावहारिक रूप से जांच करना संभव होगा।

Improvement Pertaining to RITES Approved Checksheet

In a preventive check, it was observed that in one of the RITES approved checksheets, the dimensions specified are not practically feasible to measure due to surface being covered with welding. Similar situation may exist in checksheets of other materials also. It is suggested that such anomalies may be identified and removed.

Lesson: Checksheet should be prepared and approved only after ensuring that all the parameters mentioned in checksheet can be checked practically.

ऑफर की गई सामग्री की मात्रा सुनिश्चित किए बिना निरीक्षण कार्य आरंभ करना

एक निवारक जांच में पाया गया कि आपूर्तिकर्ता ने सामग्री की पूरी तैयारी के बिना एक निरीक्षण काल निर्धारित कर दी और निरीक्षण इंजीनियर ने सामग्री की पूर्ण मात्रा की उपलब्धता की जांच किए बिना निरीक्षण किया। सामग्री की पूर्ण मात्रा की अनुपलब्धता इंगित करती है कि पूर्ण मात्रा के लिए आंतरिक परीक्षण भी पूरा नहीं किया गया था। निरीक्षण इंजीनियर ने उपलब्ध कराई गई आंशिक मात्रा का ही निरीक्षण किया।

इस मामले की सूचना आरडीएसओ को दी गई कि फर्म पूर्ण मात्रा में सामग्री उपलब्ध न होने पर निरीक्षण कॉल प्रस्तुत कर रही थी। फलस्वरूप, आरडीएसओ ने आपूर्तिकर्ताओं की स्वीकृत सूची से अस्थायी रूप से फर्म को हटाने का फैसला किया।

सीख: निरीक्षण के आरंभ में इंजीनियर को सामग्री की पूर्ण मात्रा की उपलब्धता को सत्यापित एवं सुनिश्चित करना चाहिए और सामग्री के पूर्ण मात्रा में उपलब्ध होने पर ही निरीक्षण करना चाहिए।

Inspection Initiated without Ensuring Quantity of offered Material

In a preventive check, it came to notice that supplier had placed an inspection call without complete readiness of material & IE conducted the inspection without checking the availability of full quantity of material. The non-availability of full quantity material indicates that internal testing was also not completed for full quantity. IE had conducted the inspection for the part quantity made available.

This matter was informed to RDSO that firm was placing inspection call without availability of full quantity of material. As a result, RDSO decided to temporarily delist the firm from the Approved List of suppliers.

Lesson: At the initiation of inspection, Inspecting Engineer should verify and ensure the availability of full quantity of material & carry out the inspection only if full quantity is available.

विक्रेता को निरीक्षण प्रमाण-पत्र सौंपने में हुई देरी से संबंधित शिकायत

हमें प्राप्त हुई एक शिकायत के अनुसार निरीक्षण इंजीनियर को विक्रेता को आईसी देरी से सौंपने की आदत थी। सतर्कता टीम द्वारा की गई निवारक जाँच के दौरान पता चला कि वास्तव में निरीक्षण इंजीनियर सारहीन आधार पर विक्रेता को आईसी सौंपने में देरी कर रहा था।

निरीक्षण इंजीनियर के इस कृत्य से विक्रेता को अनावश्यक देरी और परेशानी हुई।

सीख: एक बार निरीक्षण पूरा हो जाने के बाद, एक दिन के भीतर निरीक्षण प्रमाण-पत्र अनिवार्यत: जारी किया जाना चाहिए और विक्रेता को सौंप दिया जाना चाहिए।

Complaint Regarding Delay in Handing over of Inspection Certificate to Vendor

A Complaint was received that Inspecting Engineer was in habit of delaying in handing over of IC to vendor. A preventive check was done by vigilance team and it came to notice that Inspecting Engineer was actually delaying handing over of IC to vendor on flimsy grounds. This act of Inspecting Engineer had caused unnecessary delay and harassment to vendor.

Lesson: Once the Inspection is completed, Inspection Certificate should be invariably issued & handed over to vendor within one day.

निरीक्षण गतिविधियों में ढिलाई

हमें प्राप्त शिकायत में, राइट्स निरीक्षण इंजीनियर ने लैब मांग-पत्र में अप्रासंगिक परीक्षणों का उल्लेख किया था जो कि निर्धारित विनिर्देशों के अनुसार आवश्यक नहीं थे।

जांच के बाद यह पाया गया कि निरीक्षण इंजीनियर ने लैब मांग-पत्र में वैकल्पिक परीक्षण करने के लिए कहा था। इन परीक्षणों को करने में दो महीने का समय लगता है तथा इसका परीक्षण शुल्क रूपये 769478 के साथ सामग्री की अनुमानित लागत लगभग 10 लाख रु. थी। जिसके कारण भारतीय रेल को सामग्री की आपूर्ति में देरी होने के साथ-साथ विक्रेता को परेशानी हो सकती थी। राइट्स सतर्कता के हस्तक्षेप से, निरीक्षण इंजीनियर और नियंत्रण प्रबंधक दोनों ने अपनी गलती को स्वीकार किया और सामग्री का निर्धारित विनिर्देशों के अनुसार स्वीकृत परीक्षणों के अनुसार परीक्षण किया गया। फलस्वरूप, परीक्षण शुल्क काफी कम हो गया और परीक्षण का समय भी दो महीने से कम होकर एक सप्ताह हो गया।

सीख: निरीक्षण करने वाले इंजीनियर और नियंत्रण प्रबंधक को केवल वही परीक्षण करवाने चाहिएं जो निर्धारित विनिर्देशानुसार आवश्यक हों।

Slackness in Inspection Activities

A complaint was received that RITES Inspecting Engineer had mentioned irrelevant tests in Lab requisition which were not required as per governing specification. After investigation it was found that Inspecting Engineer had mentioned optional tests in lab requisition which takes two months to perform those tests and also costs Rs.769478 towards testing charges for the material costing approx. Rs 10 lakhs only. This would have resulted in unwarranted delay in supplying of material to Indian Railways and harassment to vendor. With the intervention of RITES vigilance, both IE & CM accepted their fault and got the material tested as per required acceptance tests as per governing specifications. As a result, testing fee was reduced considerably and testing time also got reduced from two months to one week.

Lesson: Inspecting Engineer & Controlling Manager should prescribe only those tests which are required as per governing specifications.

ईमानदारीः एक जीवन शैली

ईमानदारी कोई वाह्य प्रक्रिया नहीं है बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के कार्य-व्यवहार से परिलक्षित होती है इसके अभाव में व्यक्ति का कोई स्थायित्व नहीं होता। किसी भी कार्य को सफल मूर्तरूप देने में महती आवश्यकता होती है जो केवल ईमानदारी से ही संभव है।

मनुष्य की प्रतिष्ठता और सम्मान ईमानदारी पर निर्भर करती है। संस्कृत काव्य में एक युक्ति है - "सत्यं वद, धर्मं चर" अर्थात् सत्य बोलना और सत्यनिष्ठा से अपने धर्म का पालन करना। कहने का आशय यह है कि व्यक्तियों को अपने कार्य सत्यनिष्ठा और ईमानदारी से करना आवश्यक है क्योंकि मनुष्य समाज से जुडा है और सृष्टि के नियंता ने मनुष्य के लिए अन्य जीवों से भिन्न एक विशेष गुण दिया है - बुद्धि, जो उसे अन्य जीवों से श्रेष्ठ बनाती है। कोई व्यक्ति ईमानदार है या नहीं, उसके गुण-दोष, कार्य-प्रणाली, कार्य एवं व्यवहार से ही परखा जा सकता है। ईमानदार व्यक्ति परेशान हो सकता है परंतु विचलित नहीं। इसका कारण है कि ईमानदारी हमेशा सापेक्ष होती है, जो निरपेक्ष होकर भी व्यक्ति के कार्य-व्यवहार में दिखाई देती है।

कोई कितने भी षडयंत्र क्यों न रच ले ? आखिर में सत्य और ईमानदारी की ही जीत होती है। महाभारत का नाम तो आपने सुना ही होगा, जिसमें कौरवों और पांडवों के बीच चौसर के खेल में शकुनि ने बेईमानी, चालाकी करके पांडवों को हराया और उनके विरूद्ध अनेक षडयंत्र रचे परंतु अंत में सत्य की जीत हुई और पांडव विजयी हुए। मनुष्य का सम्मान, प्रतिष्ठा उसकी ईमानदारी पर निर्भर है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने के लिए आवश्यक है। इस गुण को कोई भी व्यक्ति अपने अंदर विकसित कर सकता है और यह ऐसा गुण है जो व्यक्ति को परिवार, समाज और राष्ट्र में सम्मानीय स्थान प्रदान करता है परंतु इसके विपरीत आचरण करने वाले व्यक्ति को अपमानित होना पडता है और कभी-कभी उसे कोप-भाजन का शिकार भी होना पडता है। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो ऐसे व्यक्ति समाज के लिए घातक होते है जो ईमानदारी को ताक पर रखकर अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाते है। भ्रष्टाचार ने समाज में गहरी जडें जमा ली है -

माया की अंध-दौर में, भाग रहा नर नित्य।
नस-नस बेमानी भरी, कैसे हो आदित्य ।।

रिश्वत लेना, भ्रष्टाचार करना, इसमें लिप्त रहना समाज में व्याप्त ऐसे असामाजिक कृत्य है, जिन्हें केवल ईमानदारी से ही परास्त किया जा सकता है। ईमानदारी भ्रष्टाचार के विरूद्ध सशक्त हथियार है।

ईमानदारी प्रतिमा की भांति व्यक्ति की सुंदर तस्वीर प्रदर्शित करती है जो अदृश्य होकर भी व्यक्ति की छवि को निखारती है। यदि हमें अपने किसी परिचित व्यक्ति की ईमानदारी का पता लगाना है और वह व्यक्ति हमसे बहुत दूर है, केवल उसका नाम लेते ही वहां बैठे लोग भी उस व्यक्ति की ईमानदारी का आंकलन कर लेते है। समाज में कई ऐसे भ्रष्ट लोग है जिनका नाम लेने पर उनकी ईमानदारी का पता चल जाता है, उसे बताने की आवश्यकता नहीं होती। जो व्यक्ति अपने परिवार का ईमानदारी से भरण-पोषण करता है, घर के सभी सदस्य उसका सम्मान करते है।

"ईमानदारी व्यक्ति को सत्य पर परखने की कसौटी है." यह केवल पैसों के लेन-देन तक सीमित नहीं है। अधिकांश व्यक्ति अपने जीवकोपार्जन के लिए व्यापार करते है और व्यापार की पहली शर्त ईमानदारी है। संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जो किसी बेईमान व्यक्ति के साथ व्यापार करना चाहेगा क्योंकि बेईमान व्यक्ति कब धोखा दे जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। ईमानदारी से किया गया व्यापार सफल होने के साथ ही संबंधों को बढाने में सहायक सिद्ध होता है। किसी से किया वादा, किसी से समय पर मिलना आदि हमारे दैनिक जीवन के अभिन्न अंग है, जो ईमानदारी से निभाकर ही पूरे किए जा सकते है अन्यथा व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं। किसी को समय देकर न मिलने वाले लोगों को कोई पसंद नहीं करता और ऐसे लोगों पर कोई विश्वास भी नहीं करता। जो सत्यभाषी होता है उसे कुछ याद रखने की आवश्यकता नहीं होती कि कब किस व्यक्ति से क्या कहा है। अर्थात् सत्य एवं ईमानदारी कठोर अवश्य होती है जो हमें भ्रष्टाचार जैसे अनैतिक अवगुणों से बचाती है।

सरकारी-सेवा, निजी फर्मो, कंपनियों में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिये ईमानदारी सफलता की प्रथम सीढी है इसके बिना कोई कर्मचारी प्रगति नहीं कर सकता और जिस कंपनी, फर्म में व्यक्ति कार्य कर रहा है, उसका विकास नहीं हो सकता। नौकरी-पेशा व्यक्तियों को कार्यालय, संस्थान में समय पर पहुंचकर दिए गए कार्यो को समय पर पूरा करके एवं पूर्ण ईमानदारी से कर्तव्यों का निवर्हन करना चाहिए। किसी व्यक्ति की सफल नौकरी का प्रमाण ईमानदारी है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ईमानदारी वह हीरा है जो हजार मनकों में अलग चमकता है।

भगवान दास रायकवार
राजभाषा सहायक
राइट्स लि. पश्चिम क्षेत्र मुंबई

भ्रष्टाचार: एक गंभीर समस्या

अनैतिक तरीको का इस्तेमाल कर दूसरो से कुछ फायदा प्राप्त करना भ्रष्टाचार कहलाता है। जब कोई व्यक्ति न्याय व्यवस्था के मान्य नियमों के विरूद्ध जाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए गलत आचरण करने लगता है तो वह व्यक्ति भ्रष्टाचारी कहलाता है। भ्रष्टाचार एक जहर है जो देश, संप्रदाय, और समाज के गलत लोगों के दिमाग में फैला होता है। इसका संबंध किसी के द्वारा अपनी ताकत और पद का गैरजरुरी और गलत इस्तेमाल करना है, फिर चाहे वो सरकारी या गैर-सरकारी संस्था हो। इसका प्रभाव व्यक्ति के विकास के साथ ही राष्ट्र पर भी पड़ रहा है और यही समाज और समुदायों के बीच असमानता का बड़ा कारण है। साथ ही ये राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रुप से राष्ट्र के प्रगति और विकास में बाधा भी है।

इसमें कोई संदेह नहीं है की भ्रष्टाचार ने हमारे सामाजिक मूल्यों का गला घोंट दिया है। भ्रष्टाचार के कारण समाज से नैतिकता समाप्त हो गई है। इसने हमारे रोजमर्रा के जीवन को नष्ट करना शुरू कर दिया है। इसने व्यक्ति और समाज दोनों का भारी नुक्सान किया है और देश को भारी क्षति पहुंचाई है। आज इंसानियत का नैतिक पतन हो रहा है और सामाजिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है। भरोसे और ईमानदारी में आयी इस गिरावट की वजह से ही भ्रष्टाचार अपने पाँव पसार रहा है। देश में भ्रष्टाचार व्यापक पैमाने पर व्याप्त है जो कि देश को दीमक की तरह खाए जा रहा है । भ्रष्टाचार से व्यक्ति और समाज दोनों की आत्मा मर जाती है । इससे शासन और प्रशासन की नींव कमजोर पड़ जाती है जिससे व्यक्ति, समाज और देश की प्रगति की सभी आशाएँ व संभावनाएँ धूमिल पड़ने लगती है ।

सरकारी अधिकारी जिन्हें जनता का सेवक माना जाता है, दोनों हाथ से जनता को लूट रहे हैं। शिक्षा विभाग भी भ्रष्टाचार का केन्द्र बनता जा रहा है। एडमिशन से लेकर समस्त प्रकार की शिक्षा प्रक्रिया तथा नौकरी पाने तक, ट्रांसफर से लेकर प्रमोशन तक परले दरजे का भ्रष्टाचार मिलता है। पुलिस विभाग भ्रष्टाचार कर अपराधियों को संरक्षण देकर अपनी जेबें गरम कर रही है। सरकारी योजनाएं तो बनती ही हैं लोगों की भलाई के लिए, किन्तु उन योजनाओं में लगने वाला पैसा जनता तक पहुंचते-पहुंचते कौड़ी का रह जाता है । स्वयं राजीव गांधी ने एक बार कहा था: "दिल्ली से जनता के विकास कें लिए निकला हुआ सौ रुपये का सरकारी पैसा उसके वास्तविक हकदार तक पहुंचते-पहुंचते दस पैसे का हो जाता है ।"

भ्रष्टाचार के कारण जहां देश के राष्ट्रीय चरित्र का हनन होता है, वहीं देश के विकास की समस्त योजनाओं का उचित पालन न होने के कारण जनता को उसका लाभ नहीं मिल पाता। भ्रष्टाचार के बढ़ने की एक बहुत बड़ी वजह हमारी शासन व्यवस्था की संकल्पविहीनता तो रही ही है, परंतु यदि हम इस समस्या का ध्यान से विश्लेषण करें तो इसका मूल कारण कुछ और ही प्रतीत होता है । वास्तव में मनुष्य के मन में

भौतिक सुख-साधनों को पाने की लालसा निरंतर बढ़ती ही जा रही है । इस लालसा में विस्तार होने के कारण मनुष्य में लोक-लाज तथा परलोक का भय कम हुआ है और वह स्वार्थी अनैतिक और भौतिकवादी हो गया है । आज वह विभिन्न प्रकार के भौतिक और उपभोक्ता पदार्थों को एकत्रित करने की अंधी दौड़ में शामिल हो चुका है । इसका फल यह हुआ है कि उसका उदार मानवीय आचरण-व्यवहार एकदम पीछे छूट गया है । इसमें कोई संदेह नहीं है की भ्रष्टाचार एक गंभीर समस्या है जो पूरे देश को खोखला कर रही है। इस पर अंकुश लगाना अत्यंत आवश्यक है।

भ्रष्टाचार के मकड़-जाल में हमारे देश का प्रत्येक विभाग जकड़ा हुआ है और देश के विकास में बाधक बन रहा है । किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए उसके नागरिकों का, राजकीय कर्मचारियों और अधिकारियों का निष्ठावान होना, अपने कर्तव्य का पालन करना आवश्यक है । हमारे देश

के युवाओं को भी भ्रष्टाचार से लड़ने के लिये आगे आना चाहिये । साथ ही बढ़ते भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिये किसी ठोस कदम की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार के निवारण के लिए सहज मानवीय चेतनाओं को जगाने, नैतिकता और मानवीय मूल्यों की रक्षा करने, आत्मसंयम अपनाकर अपनी भौतिक आवश्यकताओं को रखने तथा अपने साथ-साथ दूसरों का भी ध्यान रखने की भावना का विकास करने की आवश्यकता है। सहनशीलता धैर्य को अपनाना तथा भौतिक और उपभोक्ता वस्तुओं के प्रति उपेक्षा का भाव विकसित करना भी भ्रष्टाचार को रोकने में सहायक सिद्ध हो सकता है। अन्य उपायों के अंतर्गत सक्षम व दृढ़निश्चयी शासन-प्रशासन का होना अति आवश्यक है।

अत: यदि हम वास्तव में अपने देश समाज और संपूर्ण मानवता की प्रगति और विकास चाहते हैं तो इसके लिए हमें हर संभव उपाय करके सर्वप्रथम भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना चाहिए केवल तब ही हम चहुमुखी विकास और प्रगति के अपने स्वप्न को साकार कर सकेंगे ।

आओ हम एक उम्मीद बने, भ्रष्टाचार को दूर करे,

देश को उन्नति की ओर बढ़ाये और बेहतर देश का निर्माण करे ।

बी एस सी आदित्य सिंह दिनकर,
सहायक प्रबंधक (यांत्रिक),
गुणवत्ता आश्वासन प्रभाग,
राइट्स लिमिटेड (उत्तरी क्षेत्र
निरीक्षण कार्यालय)

भ्रष्टाचार से.....हारना नहीं है.....

अपने अपनों से दूर हो जाये, सपने चकनाचूर हो जाए,
दिल टूट कर तार-तार हो जाये, अपना शरीर खुद पर ही भार हो जाये।
भावनायें बाजार में सरेआम बिके, अपना कोई साथ ना टिके,
अंतरात्मा रह-रह कर चीखे, उम्मीद की कोई किरण ना दिखे,
फिर भी..... भ्रष्टाचार से.....हारना नहीं है।

काँटे दामन में भर जाए, विपत्तियों से जीवन छलक जाए,
मदद के लिए कोई ना आए, साथ किसी का भी ना भाए।
जहर जिंदगी का पीना पड़े, अपने जख्म खुद ही सीना पड़े,
अंगार दहकते पथ पर चलना पड़े, मर-मर कर जीना पड़े,
लेकिन..... भ्रष्टाचार से..... हारना नहीं है।

विघ्नों की माला गले पड़ जाए, शोलों की परत राह बिछ जाए,
मति भँवर में फँस जाए, जीवन अंधकार में डूब जाए।
जीने की कोई चाह ना भाये, दर्द दिल का किसको सुनाये,
निराशा जीवन से ना जाए, पर जहन में गूंजे एक ही सदाएं,
कि..... भ्रष्टाचार से.....हारना नहीं है।

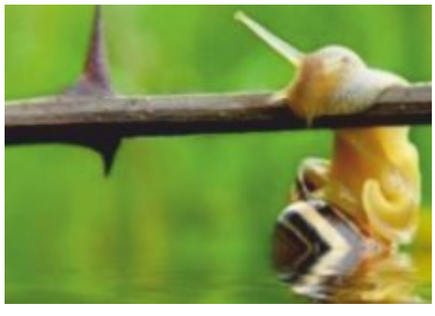

किस्मत चाहे मुख मोड़ जाए, आँसू पीने को छोड़ जाए,
तकदीर भी दो हाथ जोड़ जाए, आशा भी दामन छोड़ जाए।
अपने अपनों की हाहाकार, दिल काँप उठे सुनकर चित्कार,
अपनी नजरों में शर्मसार, फिर भी दिल से निकले यह ही पुकार,
कि..... भ्रष्टाचार से.....हारना नहीं है।

निर्बलता ने मन को छुआ, सर्वनाश तपस्या का हुआ,
वक्त खेलें ऐसा जुआ, काम ना आए कोई भी दुआ।
आत्मा भी रह कर सिसक उठे, लाज साथ रहने को झिझक उठे,
इज्जत सरेबाजार लूटे, फिर भी अंदर से यह ही हुंकार उठे,
कि..... भ्रष्टाचार से.....हारना नहीं है।

सपनों को जलने से रोको, आशा को गलने से रोको,
सञ्चित पुरूषार्थ लगा कर तुम दीपों को बुझने से रोको।
आदर्शों पर तुम खड़े रहो, विश्वास बना कर गड़े रहो,
पत्थर पानी बन जाएगा, बस एक बात पर अड़े रहो,
कि..... भ्रष्टाचार से..... हारना नहीं है।

प्रचण्ड तूफान को आने दो, भूधर का उर फट जाने दो,
रण में विजय का ध्वज लिए तुम संग्राम घोर मच जाने दो।
कर्मों को बाहु में जकड़, किञ्चित भी शिथिल ना मन को कर,
किस्मत को मुट्ठी में पकड़, मस्तक उठा और बोल गरज कर,
कि..... भ्रष्टाचार से.....हारना नहीं है..... हारना तो बिलकुल नहीं है।

बी एस सी आदित्य सिंह दिनकर,
सहायक प्रबंधक (यांत्रिक),
गुणवत्ता आश्वासन प्रभाग,
राइट्स लिमिटेड (उत्तरी क्षेत्र निरीक्षण कार्यालय)

भ्रष्टाचार व सतर्कता

हाथ रख हृदय पर अपने,
पूछें मन से-अपने ही मन की बात।
मानवता औंधें मुँह गिर रही,
सत्यनिष्ठा का हो रहा अपमान॥
क्या चाहते हैं ऐसा भारत निर्माण ?
चपरासी से नेता तक,
जमकर कर रहे इसका व्यापार।
दीमक की तरह चाट-चाटकर,
खोखला कर रहे देश का आधार॥
भ्रष्टाचार सिर्फ रिश्वत लेना ही नहीं,
बल्कि इसका दूजा पहलू ये भी है।
कार्य किया न जो निष्ठा से अपना,
देश की नजरों मे वो भी व्यभिचारी है॥
शर्मसार हुई ईमानदारी,
निष्प्राण पड़ी है इक कोने में।
गिन रही साँसो को अपनी,
शायद हो जाए कोई चमत्कार॥
राष्ट्र से नहीं-समाज से नहीं,
गली-मोहल्ला न ही परिवार।
स्वयं से ही शुरुवात करें,
जड़ से मिटा दें भ्रष्टाचार॥
अनूठे जज्बे की ताकत से,
महामारी पर रोक लगाना है।
पारदर्शी दृष्टि अपनाकर,
इस व्याधि का इलाज करवाना है॥
अनजाने में या जानबूझकर,
जिन्हें बेईमानी का स्वाद भाया है।
दंडित करने हर दफ्तर में,
सतर्कता विभाग का साया है॥
चेतना के अंतर्शब्दों को सुनो,
अंकुश इस पर लगाना है।
अग्नि देकर अपने हाथों से,
इसको चिता पर जलाना है॥
माना समय लगेगा सत्यरक्षा मे,
पर देश शिखर पर जाएगा।
भ्रष्टता के तिमिर से निकलकर,
आलौकिक आभा मे जगमगाएगा॥

मोनिका शर्मा
ड्राफ्ट्स्मेन-1

मैं भारत माता हूँ

मैं भारत माता हूँ, मैं 130 करोड़ बच्चों की अन्न दाता हूँ ।
मैं तुम्हारी भाग्य विधाता हूँ, मैं भारत माता हूँ ॥
मैं हर रंग से सजी सवंरी हूँ, हर पाप पुण्य को अपने मे समेटे हूँ ।
तभी तो मैं चंदन के पेड़ की तरह, जहरीले साँपों को भी लपेटे हूँ ॥
मेरे सपूतों ने मेरी रक्षा के लिए, प्राणों को भी वार दिया ।
सुख वैभव को त्याग कर,
मेरे हर तीर्ण की खातिर अपना बलिदान दिया ॥
खेलो खाओ और मौज करो, ज्ञान दीप का फैलाओ उजियारा ।
रोशन कर दो चहुँ दिशा को, नित नये आविष्कार का सृजन कर न्यारा ॥
मैं कर्म भू-माता हूँ, अच्छे कर्मों से मेरा उद्धार करो ।
अपनों का यूँ लहू बहा कर, मेरे मन मंदिर को यूँ न तारम-तार करो ॥
तुम्हारे सुख की खातिर, मैंने कई अतिताईयों के अत्याचार सहे ।
मेरी पवित्रता को खंडित करने में, अपने भी दो चार रहे ॥
ईक इच्छा है मेरे बच्चों, कि तुम मेरा रूप सिंगार करो ।
फैला दो हरियाली का उजियारा, नित नये आविष्कार करो ॥
मैं भूखा नहीं सोने दूंगी तुमको, तुम भ्रष्टाचार पर वार करो ।
इस माटी का तिलक लगा कर, अपने जीवन का उद्धार करो ॥
याद करो उन सपूतों को, जिन्होंने अपने प्राणों का त्याग किया ।
तुम्हारे सुख के खातिर, अपना सब कुछ तुम पर वार दिया ॥
आओ हम भ्रष्टाचार रूपी दैंत्य का, समग्र रूप से नाश करें ।
ये कैसा होता है जरा, इसके परिणामों का नित ध्यान धरें ॥
क्या- क्या, इसके परिणामों का बखान करूँ ।
ये नासूर है सभ्य समाज पर, इसको कैसे दूर करूँ ॥
संभल अभी भी समय है, भ्रष्टाचार की जड़ को ना यूँ सिंचित कर ।
इस कैंसर रूपी बीमारी से, खुद को बचा जीवन भर ॥
ना खाऊंगा ना खाने दूंगा, प्रतिज्ञा अपनी उठा लो ।
हर भ्रष्टाचारी को, सलाखों के पीछे भेजने की कसम खा लो ॥
कई अति विशिष्ट की कतार लगी, बन्द कोठरी जाने को ।
कई इस चिंता में जल रहे हैं, कि शीघ्र ही उनकी बारी आने को ॥
तिनका तिनका जोड़ कर, तूने महल जो एक बनाया ।
छोड़ गया इस जग में सब कुछ, तेरे काम कुछ भी ना आया ॥
ले पाप की गठरी डोल रहा, नरक के इन अंधियारों में ।
उस अंध कूप में भटक रहा है, सर ठोक रहा दीवारों में ॥
कातर मन से अब क्यों देखे, अपने उन पाप कर्मों को ।
दुख दे कर उनको लूटा तूने, जान कर उनके मर्मों को ॥
कहत कबीरा सुन भई साधो, क्यों बन गया मूढ़ अभिमानी तू ।
कर कमाई नेक की, क्यों बन रहा अज्ञानी तू ॥
मैं भारत माता हूँ, मैं 130 करोड़ बच्चों की अन्न दाता हूँ ।
मैं तुम्हारी भाग्य विधाता हूँ, मैं भारत माता हूँ ॥

रणबीर सिंह मल्ल
वरिष्ठ सहायक/सतर्कता

Integrity - A way of Life

Integrity means doing the right thing at all times and in all circumstances, whether or not anyone is watching. Integrity is a foundational moral virtue and the bedrock upon which good character is built. Acting with integrity means understanding, accepting and choosing to live in accordance with one's principles, which will include honesty, fairness and decency. A person of integrity will consistently demonstrate good character by being free of corruption and hypocrisy. Integrity is revealed when people act virtuously regardless of circumstance or consequences. It takes having the courage to do the right thing no matter what the consequences will be. Building a reputation of integrity takes years, but it takes only a second to lose, so never allow yourself to ever do anything that would damage your integrity.

One imbibes the qualities to be good from childhood and gradually becomes mature during subsequent stages of life. There are two aspects of good health/growth, one physical health and the other moral health. Mother ensures good physical health of her child by breast feeding which gives strength to baby and reduces the risk of viruses and many types of infections. Likewise, parents should also impart integrity and probity to their child to make him/her strong enough to overcome any adverse condition which may lure him to become corrupt. Unfortunately, in our society "taking care of child" is misconstrued as taking care of only physical health by parents, ignoring the most important moral health. If parents lie, do wrong things, adopt corrupt practices to attain lucrative living standards….. the child observes them and follows them inadvertently as parents are first role models for any child. Imagine what lesson the child learns if he/she listens to his/her dad lying to someone on phone that he is at work place, though he is at home. This small incident leaves a strong imprint in his/her tiny brain and encourages him/her to lie even to parents as parents are also doing the same. This is like infusing bad blood in innocent child. Mother is known to be first guru and father is hero for every child. Parents should understand that children follow mostly what parents do than what they preach.

After parents, teachers play very important and influential role in our lives. Needless to say that they should lead by example exhibiting integrity in personal behaviour. They should realise that many children's future depends on them as "teacher is always right" to most of the students…. And if teacher does anything wrong, students perceive it to be right.

I would like to narrate one small story on how saints teach us only what they themselves have practised, that is why their advice has the power to do us good. The great Guru Ramkrishna Paramhansa had a poor woman among His disciples. One day, she came to Him with her son and said, "Gurudev, my son wants to eat sweets every day. This habit is spoiling his teeth and I also cannot afford to buy them for him every day. My advice, warning and even beating have all been in vain. Please give him some advice and also bless him so that he stops the bad habit." Ramkrishna looked at the boy, but instead of talking to him, asked the woman to bring him back after two weeks. The woman

brought the boy to Him again after two weeks. As both sat down, Shri Ramkrishna kindly looked at the boy and said, "My dear son, is it true that you trouble your mother for sweets every day?" The boy hung his head and said, "Yes, Sir," and became silent. "You are an intelligent boy. You know that those sweets are spoiling your teeth. Your mother, too, is worried about you. If she spends money on sweets every day, how can she buy new books and good clothes for you? Don't you think you are making a mistake?". Ramkrishna's words touched the boy's heart. He looked at Ramkrishna and said, "Yes, Sir" and became silent again. "Then, will you stop asking for sweets from today?" asked Ramkrishna in an appealing tone. The boy smiled this time and said, "Yes, Sir, I will stop troubling my mother for sweets from today and stop eating them every day." Ramkrishna, pleased with the boy's reply, lovingly drew him close and said: "My son, you are a nice boy. You understand what is good and what is bad for you. You will surely grow up to be a happy man." As the boy bowed down in Namaskar, Ramkrishna blessed him and turned to the other devotees. After the boy went out into the garden, his grateful mother asked Ramkrishna, "Gurudev, why did you make us wait for two weeks to give these few words of advice?" Ramkrishna smiled and said, "You see, when you came two weeks ago, I, too, was in the habit of eating sweets brought by devotees. How could I ask your son not to do something which I myself was doing almost every day? So, from that day I stopped eating sweets. That gave me enough strength and power to advise your son to do what I myself have done. Only when we preach what we practise, our words will be full of sincerity and appeal to the listener." Every Parent and teacher should realise that their righteous conduct will nourish the child with moral immunity, not their preaching.

The child should be encouraged to learn to bounce back after failure as failures are bound to happen in every one's life. Besides success stories, children should also be taught that failures lead to success if efforts are not given up. Thomas Edison failed 10,000 times before perfecting the incandescent electric light bulb. In that context, he said that "I have not failed. I've just found 10,000 ways that won't work", he further added that "Our greatest weakness lies in giving up. The most certain way to succeed is always to try just one more time". Edison lost almost all his hearing at an age of 12, but he did not let his disability discourage him. He treated it as an asset since it made it easier for him to concentrate on his experiments and research. When massive explosion erupted in his West Orange Laboratory and the research lab was in flames, Thomas Edison told his son "Go get your mother and all her friends. They will never see a fire like this again". At the scene of the blaze, Edison said "Although I am over 67 years old, I will start all over again tomorrow" and stuck to his word and immediately began rebuilding the lab next morning without firing any of his employees. This is a classic example of not giving up and staying positive in adverse conditions and converting weakness in to strength. In the era of technological advancement, children are habituated to get all most everything on click of mouse which is bringing down patience levels and children get irritated quickly the moment something is not happening as per their expectation. They should be taught how to be patient when something is not happening their way and continue to try till they succeed. Even if they don't succeed in their endeavours, they should be explained that God has kept something better in store for them and we all should thank God for his every denial. Important thing is to teach them to use their capability, intelligence, education, willpower and endurance for good purpose, not for destruction.

I have heard many people saying "Why me?" when something bad happens to them. They never question "Why me?" when something great happens to them. It is a sign of weakness. When one starts to stop questing "Why Me?" in adverse condition and starts thanking Almighty for whatever he/she gets and praying for those who are less privileged, he/she gets lot of strength from within and does not fall prey for temporary or materialistic comforts gained through corrupt practices.
I would like to narrate true story about a great tennis player of his time, namely Arthur Ashe, who won Wimbledon defeating Jimmy Connors in 1975. He was not only a great player but also a thorough gentleman. In 1992, when the news of his cancer leaked, Ashe started getting lots of mails. Many asked him as to why God chose him of all the people while he had not done anything wrong in his life? To this Ashe's reply was, "All over the world some million teenagers aspire to become tennis players. Out of these millions, may be a hundred thousand reach to some sort of proficiency. Of them only a few thousand play in some circuit and only a hundred or so play the grand slam. Finally, only two reach the final of Wimbledon. When I was standing with the trophy of Wimbledon in my hand I never questioned God "Why Me?" And now what right do I have to ask God "Why Me?" Ashe died in 1993. This type of courage comes only when one has utmost faith in God and self-contentment. We should tell our children not to crib for whatever they did not get, but to be happy with whatever they have as many in the world are deprived of basic essentials. This will give them the art of shedding the greed and being happy with whatever they have legitimately.

As the children grow and enter adolescence, they start observing the surroundings and formulate their ideology on what they see and experience during that stage of life. To protect their immunity against wrong doings, we, as elders should ensure that they understand power of education, importance of human values, honesty, sincerity, sharing, caring for others, social justice, gender equality, religious tolerance, self-contentment, peace and harmony.

Self-contentment doesn't mean that one should not aspire for big and should stop trying to progress in life. Then the world will not progress. One should always dream big and chase his dreams as Dr Abdul Kalam said. One should strive to realise his/her dreams only with high integrity following righteous path. Within their reach and competence, everyone should try to achieve his/her goal, but greed should not play spoil sport forcing him/her to try and achieve the goal by unfair means.

This positive inner strength, thus attained from the beginning helps to stay away from the evils like gender discrimination, intolerance towards other religions and castes, greed to become rich by any means, ego and overpowering the weak and poor. As a result, he/she will remain good through out the life and will not go astray whatever may be the condition. Some people cite lack of jobs, difference between haves and have- nots, hunger, suffering, lawlessness, discrimination on the basis of gender, caste, creed, colour, region and religion, inefficiency in government administration, soaring prices, lack of basic amenities, poverty……etc as reason for one not being able to be ethical and for scarifying integrity. Though the adverse effects of these evils can't be ignored outrightly, one should draw inspiration from great persons like Dr Abdul Kalam. A man from religious minority, hailing from a

small town in southern Tamil Nadu, with poor financial status successfully raised to the level of Missile man of India, arguably greatest President of India and Bharat Ratna without complaining about any of the evils mentioned above. I request one and all to read "Wings of Fire" to know and realize how a person with highest integrity remains rock solid under any circumstances and brings laurels to society and country he belongs to. Icing on the cake is that the great man never cribbed, instead praised India without losing any opportunity on various occasions and lauded India as Greatest nation and strived to realise his dream to see our nation as developed one. I honestly request every one to read his speeches to know how positive he was about our nation. Why he could see the good in every condition and why we fail to be positive about our condition is because he was strong from within and never sacrificed his moral values citing some or the other reason to tread the wrong path.

Child grows learning from parents, teachers, friends and society. The journey continues picking up positives as the integrity will be working like self-immunisation throughout out the journey…… and then comes a time when he/she joins a job.

By that time, the youngster matures and realises that corruption has been one of the major obstacles to economic, political and social progress of our country, all stakeholders such as Government, citizens and private sector need to work together to eradicate corruption, every citizen should be vigilant and commit to highest standards of honesty and integrity at all times and support the fight against corruption.

He/She, therefore, pledges:

To follow probity and rule of law in all walks of life;

- To neither take nor offer bribe;
- To perform all tasks in an honest and transparent manner;
- To act in public interest;
- To lead by example exhibiting integrity in personal behaviour;
- To report any incident of corruption to the appropriate agency.

If each one of us is self-disciplined, satisfied and ethically strong clubbed with high integrity, the need for policing, punitive actions, courts and all other means to keep the society in good condition by enforcement of laws diminishes considerably. The society in such a condition will be prosperous, educated, healthy, peaceful and happy.

We all talk about integrity, honesty, sincerity and expect them to happen in every walk of life. To achieve the same, we shall follow Mahatma Gandhi's advice of "Be the change you wish to see in the world". That is possible when integrity becomes our way of life and that's how we can gather courage to do the right thing, no matter what the consequences will be. Let us pledge and practise to make integrity, a way of our life.

Murali Krishna Krovvidi
AGM/Vigilance

Ethics and Strategy

The term Ethics refers to accepted principles of right and wrong that govern the conduct of a person, the members of a profession, or the actions of an organization.

In our society there are universally accepted principles of right and wrong that are codified into laws. In the business arena there are laws governing:

- Contracts and Breaches of contract (contract laws)
- Protection of intellectual Property (Intellectual property Law)
- Competitive Behavior (Anti trust law)
- Selling of securities (Securities law)
- Product liability (Tort laws)

Not only is breaking these laws unethical but illegal. Generally, what is unethical is also illegal but the two sets may not always completely overlap. What should business managers do in such cases? Let us analyze an example of NIKE sweat shop: -

NIKE sweat shop:

Nike does the design and marketing of the products, but the manufacturing is outsourced to low cost countries like Vietnam. The workers were working in substandard environment, the total or hourly wages were very low something like 2$ and working conditions were dangerous. This resulted in a furore amongst students in college & universities in the west. This group happened to be the target customers for NIKE and this finally forced NIKE to step back. Realizing that their subcontracting policies were being considered unethical, NIKE was forced to set up a code of conduct for their sub-contractors. Also, they set up a scheme where all their subcontractors would now be monitored annually by independent auditors and as per a different set of established guidelines (OSHA) which are applicable in US to all subcontracted workers. This demonstrates that behaving ethically may sometimes require going beyond what is legal. It requires the establishment and enforcement of rules that adhere to accepted moral principles of right and wrong.

Ethical issues in strategy:

Ethical issues that strategic managers face are mostly owing to potential conflicts between the goals of the enterprise, or goals of individual managers and the fundamental rights of important stakeholders. Stakeholders have basic rights which should be respected and violating them, as such, is considered unethical.

Who are the stakeholders in the company?

The company has external and internal stakeholders who make contributions to the company and receive some inducements or compensations in return.

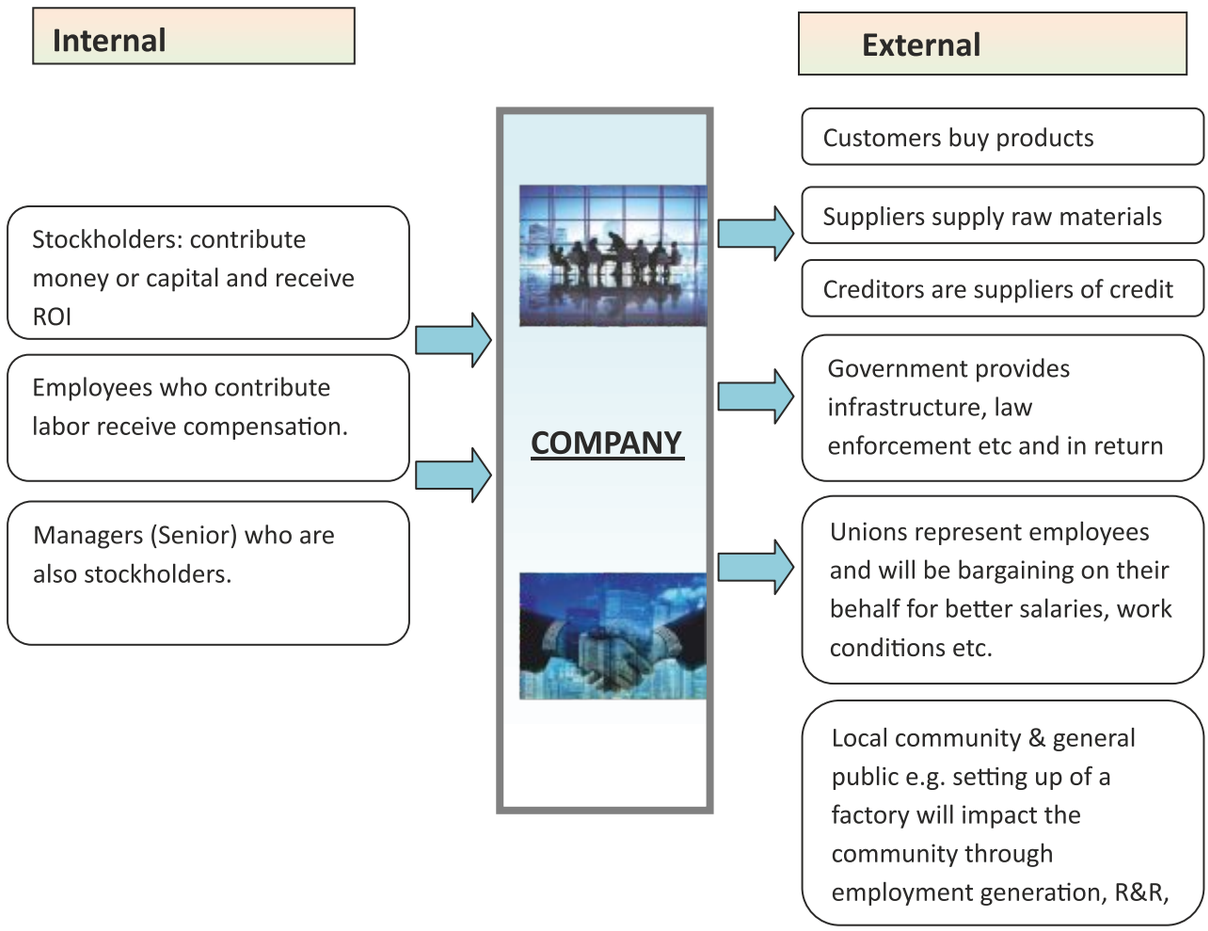

All stakeholders are in a give and take relation with the company and a company must take into account the claims of all of them before formulating strategy. This is achieved through stakeholder impact analysis.

Boeing case:

At times managers pursue illegal strategies to maximize profitability. Take as an example, the case of Boeing and Lockheed Martin. There was a very high value tender floated by the US Air Force where Lockheed Martin and Boeing were direct competitors. Realizing that Lockheed Martin was in a better position to win this contract, Boeing took a number of steps to counter their rivals. They stole details of the design proposal from Lockheed Martin through bribery of its employees and also engaged some officials in the US government who would lean towards the Boeing proposal during the evaluation phase. This they did by promising future lucrative positions in the Boeing organization to the said officials. Eventually, all of this came out into the public domain and Being had to pay severe penalties for this indiscretion. This is an example where, to maximize profit, an organisation's managers can act in an unethical manner.

Agency theory: -

Agency problems can arise in case of delegation of authority. For this an understanding of the Principal-Agent relationship is required. The Principal in this case is the stockholder who has invested in the company. The Agent is the CEO or Board of Directors who in turn may be delegating the authority to business heads. The delegation happens throughout the company from senior management to mid management – all of whom act as agents. Problems arise when goals are different and there is information asymmetry.

A number of corporate scandals swept through the corporate world in the early 2000s when senior executives made few unethical moves and corporate governance structures failed to keep a check on them resulting in scandals. A few typical examples were Enron, WorldCom, Tyco, Computer Associates, and Health south, Adelpha communications, Dynegy, Royal Dutch shell and Italian food company Parmalat.

At Enron some $27 billion in Debt was hidden from shareholders, employees and regulators in special partnerships that were kept off the balance sheet. At Parmalat, managers i.e. Agents apparently invented some $8 to $12 billion in assets to shore up the company's balance sheet, assets that never existed. In the case of Royal Dutch Shell, senior managers knowingly inflated the value of the company's oil reserves by one-fifth, which amounted to 4 billion barrels of oil that never existed. The compensation that the senior management in Enron drew was very high by ensuring a share price hike painting a rosy picture of the existing company condition, expecting that the conditions will improve next year and so on, but which never actually happened. Confronted with agency problems, the principals i.e. shareholders face the challenge of:

- Shaping the behavior of the agents so that they act in accordance with the goals set by the principals.
- Reduce the information asymmetry between principals and agents.
- Develop mechanisms for removing the agents who do not act in accordance with the goals of principals and mislead them.

Principals try to deal with this through governance mechanisms.

The Roots of Unethical Behavior:

1. Business ethics cannot be divorced from personal ethics. A person who is unethical in personal environment is likely to be unethical in business dealings.
2. Some organizations de-emphasize business ethics and consider only economic factors. E.g. while checking the feasibility or financial viability of a project we check the NPV or IRR. But beyond that, the question whether the project affects the community positively or not is a good question that would help assess a project ethically.

3. There is often pressure to meet performance goals.
4. If leaders are unethical there is a possibility that subordinates will behave unethically.

Behaving Ethically

Though ethical problems are one of the most vexing issues with difficulty to chalk out the exact correct path to be taken as resolution, the following few points can be ensured in order to ensure ethical justice:

1. Favor hiring and promoting people with a well grounded sense of personal ethics
2. Build an organizational culture that places a high value on ethical behavior
3. Make sure that the leader in the organization not only articulates the rhetoric of ethical behavior but also acts in a manner consistent with that
4. Put decision making processes in place that requires people to consider the ethical dimension of business decisions
5. Hire ethics officers
6. Put strong governance processes in place
7. Act with moral courage

BUSINESS ETHICS (At employee or individual level)

A culture of ethics needs to be imbibed at the employee level as well. A few basic guidelines which the employee can follow in order to act ethically:

1. Act with integrity, competence, diligence and respect and in an ethical manner with the public, clients, prospective clients, employers, employees and colleagues
2. Practise and encourage others to act in a professional and ethical manner that will reflect favourably on themselves and the profession.
3. Maintain and improve their professional competence and strive to maintain and improve the competence of other professionals

Employees need to work on the following 4 dimensions to ensure that they represent and help to create an ethical organization:

1. Formulate an appropriate code of professional conduct:
    - Knowledge of law: An employee, to start with, must understand and comply with laws, rules and regulations and codes and standards of the authority governing the actions of the organization. A good place to start with will be to read the HRM manual of the organization.
    - Independence and Objectivity: A good practice is to generally maintain independence and objectivity in professional activity like for example: it's a

good practice not to accept gifts, solicit offers, benefits which will compromise the independence and objectivity either of your own or someone else.

- Misrepresentation: There should not be misrepresentation of analysis, recommendations, actions or other professional activities. Plagiarism may also be considered a misrepresentation.
- Misconduct: Engaging in any conduct that involves dishonesty, fraud or deceit which reflects poorly on the integrity, good reputation, trustworthiness or professional competence must be avoided.

2. Duties to Employers: Every employee has a duty to the employer which would include
   - Loyalty: Being loyal to the employer would include not depriving the employer of your own skills, or divulging confidential information about the employer thus bringing harm to them.
   - Responsibilities of supervisor: As supervisors, reasonable effort needs to be made to ensure that anyone subject to your supervision or authority complies with applicable laws, rules, regulations and the code and standards.
3. Analysis, Recommendations and actions:
   - Diligence and reasonable basis: Use diligence, independence and thoroughness in analysis and recommendations.
   - Recommendation and actions must have a reasonable basis, supported by research and investigation.
   - Record retention: Maintain all records supporting analysis, recommendations, actions and all other communications with clients and prospects.
4. Conflicts of interest: There must be a full and fair disclosure of all matters that may otherwise impair the independence or objectivity or interfere with the duties to employers, clients and prospects. Disclosure must be prominent, in plain language, and effective.

In the absence of a strong focus on Ethical Corporate practices, an organization might perform satisfactorily in the short run but will never have lasting success in the marketplace.

Ranjana Roy Choudhary

Manager/HW/P&C

The Dream of Corruption-Free India

In a blooming phase like today, someone does not need to tune in a news channel or skim through a newspaper to infer the breakneck speed at which our economy is growing. One can easily witness the proliferation of railway and metro rail networks, reduction in power failures, supply of drinking water, revamping of tourist places (thanks to Incredible India project!), or the rapid unveiling of multitude of facilities by the government and realize the revolutionary trend no other government could show despite the litany of debacles and declines, challenges from other countries, possibilities of war and social anarchy, and the swift changes owing to changing governance.

Just the way government has its own challenges, so do we as ordinary individuals working in our private space, fulfilling so called our ordinary needs. This is what we envision as our role in the cohesive playground of economy which is so far so forth contradictory to what we think about that of political leaders. Multiply it as many folds as enough to diminish our significance and we are ready to blame the political leaders for everything that affects us – increased prices, unfair taxation, unemployment, poverty, beggary, crime, incompetence of the police and court, lack of facilities and the list is endless. Little do we ever gauge the cumulative effect which our ordinary actions may cause to these factors.

A good corporate person can motivate his colleagues to do good work which further propagates both bottom-up and down the ladder until the entire company system is affected in a subtly indirect way. Vice-versa, a corrupt employee not only becomes a direct retarding factor in the national capital, but may also influence those around him to practise the unlawful actions of easy earning. This is where the roots of corruption lie – in an individual's decision. The higher the position, the more the effect.

Corruption, the ascending serpent has reached a level where bribe is paid for getting right things done at right time rather than for getting wrong things done making it as a default and respectable principle sought by even the innocent class of people. Further, corruption has become something respectable in India, because respectable people are involved in it.

The malignant tree of Corruption is so deep-rooted that it has more or less become a way of life, a well cultured, well-groomed evil.

Impacted Areas

If a student wants to get admission to a good college, he has to pay lakhs of rupees to get his low entrance score weighed up against the preferred eligibility criteria. Same is happening in the schools, job sectors, factories and the retail market where the problem has outgrown in the form of adulteration in food, falsified supplies of consumables by unscrupulous workers who

cheat the consumers by playing with the health and lives of the people. Traffic police for example, often charge penalties or threaten to seize the license on subtle grounds for the purpose of stashing their pockets with black money. In the assessment of property tax the officers charge money even if the house is built properly according to the Government rules and regulations. Also this is no more an absurdity how the municipal parties and the police reach the construction sites to claim 'their share of money'. Unfortunately, even the networking through social media gives opportunity to job seekers to cultivate personal relationships with employers so as to influence the hiring decisions. Neither the government efforts can have any control on favoritism, nepotism and clientelism or abuse of discretion.

Corruption can take any form - patronage, bribery, fraud, embezzlement, extortion, nepotism, theft, etc. which prevails in almost all sectors of operation, be it private or public industry. Illegal methods adopted in political process and of government agencies such as the police, Railways, aeronautics, coal, oil and steel industries lead to corruption at public level. Compromises made either by a corporate firm or by individuals acting on behalf of a corporation or other business entity lead to corporate corruption. Other sectors such as labor and philosophy, religion, research, etc are not spared from its claws.

Effects

Amongst the negative impacts such as hindrance in technological advancement, poor productivity, quality degradation, loss of integrity, and higher process for consumers, the major economic game changer is the 'redistribution of wealth' which leads to lower income to all citizens. Due to lack of transparency in the system, working class people keep on paying tax to the government which gets misused and fall in pocket of others in form of corruption. Poor people are becoming poorer and rich people are getting richer day by day leading to increase in inflation. Also, the public funds which were intended to be used for construction of schools, roads and railways, public amenities, hospitals, parks go into private pockets which hinders the infrastructural growth of the country.

Reforms Introduced by Government.

In a view to curtail corruption to a high degree, few economic reforms have been and keep being introduced by the government. Amongst the ancient ones include the 'service rules' for government officials applicable to different classes such as Central Civil services (Conduct) rules 1964 and All India Services (Conduct) rules 1968 which prohibit government officials from receiving gifts, hospitality, transport or any undue advantage that exceeds the sanction by the government. Later in 1988 came the Prevention of Corruption Act (PCA) which criminalizes receipt/giving of any undue advantage by/to public servants.

Right to Information Act (RTI) of 2005 was introduced to help civilians work effectively towards tackling corruption by allowing them to request information, for a fixed fee of ₹10 from a Government body. In turn, this public authority is required to reply to the request within thirty days. Activists have used this to uncover corruption cases against various politicians and bureaucrats.

In 2003, the Central Vigilance Commission (CVC) as a pursuant to the Central Vigilance Commission Act of 2003 by the central government was given the statutory status. The role of CVC is to inquire into the offences alleged to have been committed under the PCA and to advise, plan, execute, review and reform vigilance operations in Central Government organizations.

Followed by Foreign Contribution Regulation act in 2010, against the acceptance of contribution from 'foreign sources' by government regulated agencies, another noteworthy milestone came in the form of the Companies Act, 2013 which prevents government fraud under which auditors and cost accountants are mandatorily required to report any suspected unlawful acts to the central government which includes both private and commercial bribery. The act further gave birth to the Serious Fraud Investigation Office (SFIO) which is empowered to detect, investigate and prosecute white-collar crimes and fraud.

The two strong reforms launched by the Govt. of India - Demonetization and GST Act in 2016 and 2017 respectively changed the face of the country by promoting the online means for monetary transactions on identity basis.

Recently introduced is the Fugitive Economic Offenders Act (FEOA) in July, 2018 which targets Fugitive Economic Offenders against whom an arrest warrant has been issued for certain predicate economic offenses involving Rs. 100 Crores and who have either left the country to escape prosecution or who are abroad and refuse to confront the charges.

However, despite these efforts made by the government, a lot needs to be done to make our country corruption free.

Effective Measures That Can Help Control Corruption in India

R. Klitgaard, so called as 'the world's leading expert on corruption' postulates that corruption will occur if the corrupt gain is greater than the penalty multiplied by the likelihood of being caught and prosecuted:

$$\text{Corrupt gain} > \text{Penalty} \times \text{Likelihood of being caught and prosecuted.}$$

Unfortunately, in a country like India, both the influencing factors i.e. penalty and likelihood of being caught is less being corruption prevailing on a very large scale making it appear like a common practice than a crime.

Education: According to a report by Transparency International, the least corrupt state is

Kerala, the reason being that Kerala's literacy rate is highest in India. Those who are uneducated are unaware about procedures through which they can get justice. Corrupt public servants try to make a fool of them and often demand bribes. It is due to unawareness in the field of law, public rights and procedures thereof that a common and an uneducated suffer out of the corrupt society. This suggests that if we are educated, we can understand our rights well.

Counseling: Klitgaard states that regulation of counseling, discretion of individuals and a high degree of transparency through their organizations and the media plus public access to reliable information could reduce the problem. Organizations must motivate their employees towards social causes and their merits. Sound cultural and ethical environment in a company can be a major influential factor.

Transparency: Another effective measure could be disclosing financial information of government officials to the public to improve accountability. This would create transparency about their income sources, assets and liabilities. Additionally, a country should establish a culture of ethical conduct in society with the government setting the good example in order to enhance the intrinsic morality.

Awareness: It is responsibility of the citizens to check the background of the candidates during elections and not vote in favor of the criminal politicians. Also, on suspect of any cases of unlawful transaction or personal benefit in any form, they should immediately report the case to the concerned authority. They should be aware about the provisions available to them and the right procedures so as not to inadvertently fall into the trap of corruption.

Penalty: If a person is caught in an unlawful act, strict actions and proceedings should be taken. The lack of fear of getting caught and penalized is a big reason why government reforms are not able to create an expected outcome of corruption free India.

Conclusion

It has been noted that corruption does not disappear as countries develop and modernize, but rather, takes on new safer forms. For example, bribery in the form of money, gifts, company shares, entertainment, employment follow the modern routes of online channels to enter commercial pool. The personal gain that is given can be anything from actively giving preferential treatment to having an indiscretion or crime overlooked. Embezzlement and theft are other forms dealing with illegal control of public funds or assets.

The one thing that needs to be ensured is proper, impartial, and unbiased use of various anti-social regulations to take strong, deterrent, and timely legal action against the offenders, irrespective of their political influences or money power. Firm and strong steps are needed at individual level to say no to giving/accepting bribe or any form of corruption which shall only happen with virtue, honesty and the objective of welfare of the people of India.

Bharti Jain

Manager/S&T

Wings of the Demon

The giant bird in rustle descends
Down miles of blackish smoke
With claws incise, an angle so precise
Wings flap towards the country we reside

The crops of lush terrains prickle
And the rains fear before they trickle
When the black-bodied sits high
Stirring the tranquil clouds of the sky

Gasping in rumination
Mumbling in contemplation
The blood thirsty beak shines
Betraying the stash of venomous bile

One sting in the feet of economy
And see the venom runs uphill
To make the branches shrink and droop
Tipping at people, helpless people

The giant wings obscure the light
And spread their darkness more than the night

It warns to mop up all it sees -
Harmony, prosperity and the peace

So as the avalanche in the harmonious river
Disturbs the water
Or a dusty cumulus in the peaceful sky
Disturbs the weather

Enough of this impassive creed
And blaming the aristocrats indeed
Because the evil has erupted
From the seed of our own greed

Bankers, policemen, teachers, engineers
Will have to suffice
Muggers, thieves, dacoits, murderers
Will have to refine

Before the economy is chocked to rubble
And selfish means give up the tussle
The motherland will ask one day
"Did you shoo the bird away?"

Bharti Jain
Manager/S&T

Vigilance Activities During the Year 2019

CVO at Vendor Meet at Mumbai on 17.09.2019

CVO at Vendor Meet at Mumbai on 17.09.2019

Vigilance Activities During the Year 2019

Lecture on "Common Irregularities observed in works" in RPO-Secunderabad on 11.10.2019 by Shri Murali Krishna Krovvidi, AGM/Vigilance

Lecture on "Common Irregularities observed in works" in RPO-Secunderabad on 11.10.2019 by Shri Murali Krishna Krovvidi, AGM/Vigilance

Poster Competition at AVR Public School, Gurugram on 22nd Oct 2019

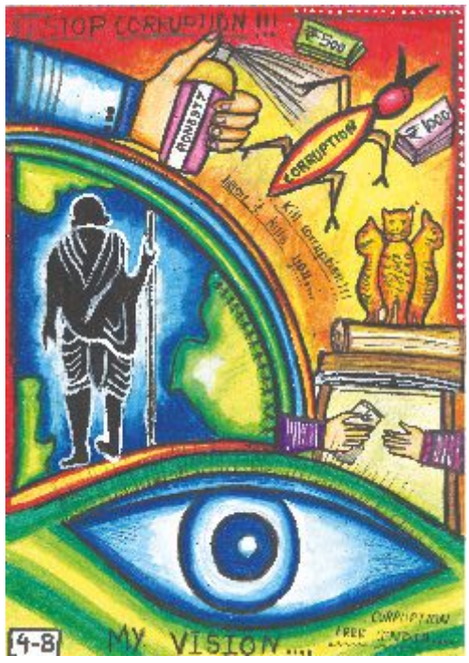

First Prize
Ms. Himani
Drona Public School

Second Prize
Ms. Sakshi
Rockford Convent Sr. Sec. School

Third Prize
Ms. Simran Chouhan
Pole Star Public School

Vigilance Awareness Week – 2018

CMD/RITES administered "Integrity Pledge" to officials posted at Corporate Office on 29.10.2018

"Integrity Pledge" taken by RITES Employees on 29.10.2018

Release of Vigilance Bulletin by CMD, Directors and CVO on 02.11.2018

Unveiling of Vigilance Pamphlet by CMD, Directors and CVO during Vigilance Awareness Week 2018

RITES
THE INFRASTRUCTURE PEOPLE

Lecture on 'Red Flags in Public Procurement' by Mrs. Heena Doshi, World Bank Expert on 30.10.2018

Lecture on 'Red Flags in Public Procurement' by Mrs. Heena Doshi, World Bank Expert on 30.10.2018

Gram Awareness Sabha at Tajpur Khurd Village on 29.10.2018

Villagers at Gram Awareness Sabha at Tajpur Khurd Village on 29.10.2018

Gathering of Students and Teachers during Elocution Competition at Drona Public School, Gurugram on 30.10.2018

Elocution Competition at Drona Public School, Gurugram on 30.10.2018

Prize distribution to winners of Elocution Competition, 2018

Prize distribution to winners of Elocution Competition, 2018

RITES
THE INFRASTRUCTURE PEOPLE

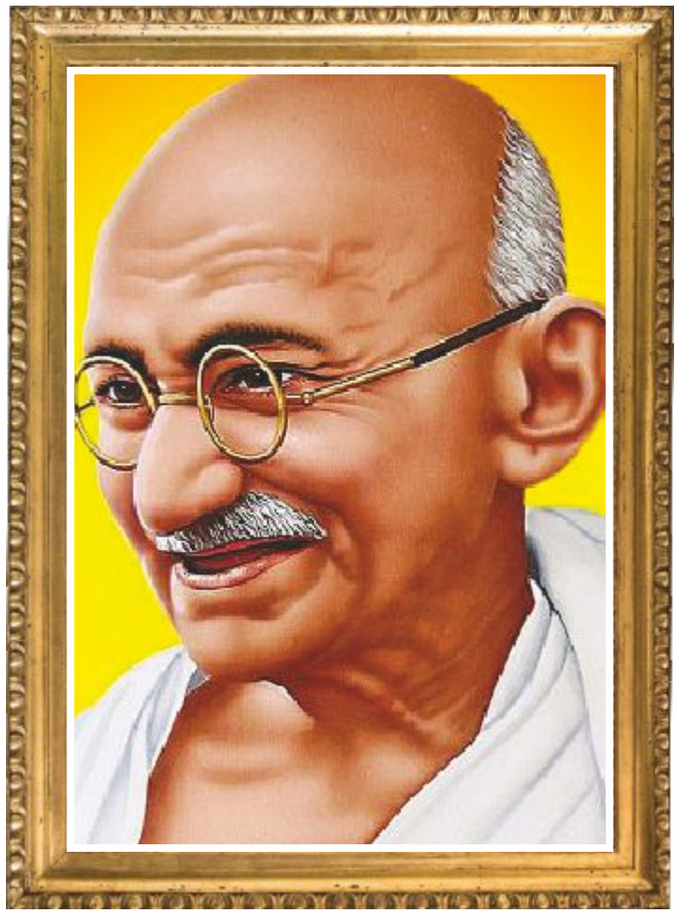

"Be the change that you want to see in the world"

RITES

THE INFRASTRUCTURE PEOPLE

VIGILANCE DEPARTMENT

(Schedule 'A' Enterprise of Govt. of India)
Corporate Office: RITES Bhawan, No. 1, Sector-29, Gurgaon-122001 (India)
Registered Office: SCOPE Minar, Laxmi Nagar, Delhi-110092 (India)
Tel: +91-124-2818687